पंचम अध्याय

पंचम अध्याय

''मंटो की कहानियों की विशेषताएँ''

जीवन की कई रंगबिरंगी छटाओं को मंटो ने अपनी कहानियों में उतारा है। इनमें विविधता है। इन कहानियों में उन्होंने समाज की कई तस्वीरें खींची हैं। जो अपने आपमें अप्रतिम तथा समर्पक हैं। जो जिया वही उन्होंने लिखा। उनकी कहानियों में यथार्थता तथा स्पष्टता के दर्शन होते है। उन्होंने अपनी कहानियों में समाज के विभिन्न आयामों को खोलकर रख दिया है। ज्यादातर कहानियों में वे खुद मौजूद हैं । उन कहानियों की घटनाओं को उन्होंने नजदीक से अनुभव किया है और अपने अनुभव को लेखनी दी है। निड़रता से, बेझिझक होकर उन्होंने कहानियाँ लिखीं। कुछ भी छुपाने की कोशिश नहीं की। यही कारण है उनकी कहानियों में तीखे स्वर दिखाई देते हैं। जिंदगी के स्थूल तथा सूक्ष्म विभन्न पहलूओं को अपनी कहानियों में उजागर करने की कोशिश उन्होंने की है। बहुत कम जिंदगी उन्होंने जी, फिरभी उनका रचना-संसार बहुत ही व्यापक है। अपने जीवन में उन्होंने बहुत विराधों का सामना किया और इसका परिणाम भी उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। अपने जीते-जी लोगों के लिए वे पहेली बने रहें और मरने के बादभी पहेली बने हुए हैं। जीवन तथा इस पहेली को सुलझाने के लिए उनके रचनाओं की गहराई तक जाना आवश्यक बन पड़ता है। तभी उन्हें समझा जा सकता है। उन्होंने अपनी रचनाओं को बहुतही गहराई से रचा है। इन गहराईयों तक पहुँचने से जीवन तथा समाज के सच्चे चित्र उपस्थित होते है। उन्होंने अपनी कहानियों से उर्दू-हिंदी कहानी साहित्य को समृद्ध किया है।

मंटो की यह विशेषता है कि वे अपनी कहानियों में, अपने निजी दृष्टिकोण और विचार-धारा के साथ, दखलंदाजी की हद तक, पूरे-का-पूरा मौजूद रहते हैं; अपने पात्रों की खुशियों के साथ, वे उनकी तकलीफें और दुखभी सहते हैं। यही वजह है कि उनकी कहानियों में संस्मरण का हल्कासा रंग हमेशा झलकता हैं - किस्सा-गोई का वह स्पर्श, जो किसी बयान को यादगार बनाने के लिए बहुत जरूरी है। वे अपनी सारी शक्ति के साथ, दर्द और दुख और तकलीफ के सही मुकाम पर उंगली रखते हैं - कि यही उनके निकट लेखन का उद्देश्य है। वे समाज के निचले तबके के लोगों की ओर मुड़ते हैं और उनकी तरफ अपने प्राणदायी हाथ बढाते हैं। उनकी तलाश, दरअसल, लुप्त होती इंसानियत की तलाश है।

मंटो ही वे तन्हा कहानी लेखक हैं जिन्होंने कहानी में एक सशक्त और व्यक्तिगत मौलिक शैली की नींव रखी। सामाजिक और यौन समस्याओं को एक ऐसी इकाई के रूप में

व्यक्त किया जिसकी व्याख्या फ्रायड और मार्क्स के सिद्धातों की शब्दावल में नहीं की जा सकती। मंटो केवल एक रूढ़िभंजक लेखक ही नहीं थे, बल्कि उनकी कृतियों में गहरी मानवीय संवेदना है। एक के बाद एक मंटो ने उर्दू कथा-साहित्य को अच्छी से अच्छी कहानियाँ दीं।[1]

अपनी सारी समाज-परकता और सोद्देश्यता के बावजूद, मंटो 'व्यक्ति' के सबसे बड़े हिमायती हैं। जहाँ वे, व्यक्ति के रुप में आदमी द्वारा समाज पर किए गए हस्तक्षेपों के प्रति गाफिल नहीं हैं, वहीं वे उन असहज दबावों के भी खिलाफ हैं, जो समाज की ओर से व्यक्ति को सहने पड़ते हैं। समाजद्वारा व्यक्ति की आजादी के मूल अधिकारों के हनन को मंटो एक जुर्म समझते हैं; उसी तरह, जैसे व्यक्ति द्वारा जनता के शोषण को।

प्रो. नारंग के अनुसार मंटो की विशेषता यह है कि उन्होंने न केवल बदनाम औरतों और वेश्याओं पर कलम चलाई, बल्कि साहित्य को उद्देश्यवादिता और नैतिकता के प्रचार का माध्यम समझने का विरोध किया। वे उस पर बिना कुछ आरोपित किए यथार्थ को उसकी भीतरी सच्चाईयों के साथ चित्रित करना चाहते थे। उनकी कहानी 'ठंडा गोश्त' पर फैज ने भी यह कहते हुए प्रतिकूल टिप्पणी की थी कि "कहानी के लेखक ने अश्लीलता तो नहीं की, अदब के ऊँचे आदर्शों को पूरा भी नहीं किया। क्योंकि उसमें जिंदगी की मूल समस्याओं का संतोषजनक विश्लेषण नहीं है।" इस पर प्रो. नारंग की प्रतिक्रिया साहित्य के प्रति उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। "गोया अदब का उद्देश्य बुनियादी सच्चाईयों का विश्लेषण करना और संतोषजनक विश्लेषण करना है, यानी वह काम जो खुद फैज ने नहीं किया था।" उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं कि "अदब के मामले में मंटो हरगिज किसी तरह की समझौतेबाजी के पक्षधर नहीं थे। संभवत: कई कहानीकारों में वे पहले शक्स हैं, जिन्होंने अदब और आर्ट को तौर अदब और आर्ट पहचानने और परखने पर जोर दिया।" आमतौर पर यह समझा जाता है कि साहित्य और कला को साहित्य और कला बनाए रखने का आग्रह कलावाद या सौंदर्यवाद है, जिसका सामाजिक यथार्थ से कुछ लेना देना नहीं। लेकिन प्रो. नारंग का यह लेख इस बात की मिसाल है कि साहित्य और कला समाज से परे नहीं हो सकते और ये समाज से गहराई से प्रतिबद्ध होकर भी अपनी अस्मिता बचाए रख सकते हैं। यह मंटों के हवाले से इस लेख में उन्होंने बहुत अच्छी तरह साबित किया है।

मंटो ने बिना किसी आदर्श या नैतिकता के आरोपण या प्रक्षेपण के बदनाम औरतों और वेश्याओं की अंतरात्मा की सच्चाई हमें दिखलाई। उनकी ऐसी कहानियों की अंतर्वस्तु उनके इस एक वाक्य में अच्छी तरह अभिव्यक्त है कि, "हर औरत वेश्या नहीं होती, लेकिन हर वेश्या औरत होती है।" प्रो. नारंग के शब्दों में "ऐसे स्थान पर वेश्या का अस्तित्व

कोई सीमित पात्र न रहकर जैसे सृष्टि की दर्दमंदी के अथाह संगति का हिस्सा बनकर औरत के आर्की इमेज से एकसार हो जाता है।'' यही कारण है कि उनकी कहानियाँ देखते-देखते क्लासिक का दर्जा पा गईं।[2.]

मंटो की कहानियों में नाटकीयता दरअसल वहाँ आती है, जहाँ वह आवेग और आक्रोश में बहकर, सनक की हदों को छूने लगता है। यही वजह है कि 'स्वराज्य के लिए', 'नंगी आवाजें' और 'हतक' के अंत नाटकीयता की ओर झुकते हैं। जुमलेबाजी उनकी और एक विशेषता है। जुमले गढ़ना और उन्हें कहानियों में नगीनों की तरह जड़ना भी मंटो की अपनी ही विशेषता है।

मंटो मनौवैज्ञानिक तथा यौन समस्याओं को प्रस्तुत करने वाले अत्यंत सफल उर्दू कथाकार थे। इनकी अति यथार्थवादी कटु शैली के कारण इन पर कई प्रकार के आरोप लगाए गए तथा अभियोग भी चलाए गए। 'सेक्स' मंटो के मन-मस्तिष्क पर छाया हुआ था। उनपर फ्रायड का भी गहरा प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

मंटो ने नैतिक एवं चारित्रिक रुप से शोषित पात्रों को वाणी प्रदान की है। मंटो का उद्देश्य संभावत: यह समझना है कि समाज के हाथों विवश होकर कुछ लोग किस प्रकार अपने मान, मर्यादा तथा लज्जा आदि बेचने को मजबूर हो जाते हैं। कामवासनाओं का बड़ा सजीव चित्रण मंटो ने किया है किंतु कहीं-कहीं वह ऐसे परिवेश के प्रति पूर्ण रुप से घृणा पैदा करने में असफल भी रहे हैं। संभवत: मंटो जैसे कथाकारों के संबंध में ही इकबाल ने कहा था - 'आह बेचारों को आसाब पे औरत है सवार।'

प्रगतिशील साहित्य का जो लक्ष्य है - पददलितों को उभारने का वह मंटो के यहाँ कम ही मिलता है। मंटो की शैली मे प्रवाह है, उतनी गहराई नहीं। प्राय: एकही जैसी बातों की आवृत्ति है।[3]

मंटो के पास सुंदर शब्दों की कमी बेशक हो, उनकी भाषा में कथ्य को झलकाने की अद्भुत शक्ति है। कहानी कहते हुए वे चाहे कहीं का कहीं पहुँच जाएँ, उनकी आँख अपने कथ्य और संवेदना पर एकाग्र रहती है। मंटो इस शैली के उस्ताद हैं। उनकी कहानियाँ औरत-मर्द के रिश्तों से संबंधित हों या समाजार्थिक विसंगतियों से, मंटो की यह खास शैली हर जगह मिलेगी। उनके रचना-व्यक्तित्व की गहरी, अमिट छाप उनकी कहानियों में देखी जा सकती है। कहानियों के अंत में वे कोई नसीहत या निष्कर्ष कभी नहीं देते। कहानी में उभर रहे संघर्ष या द्वंद्व का सरलीकरण या समाहार करने में भी उनकी दिलचस्पी नहीं है। वे कहानियों के अंत में प्रचलित नैतिकता का निषेध करते हैं और पाठकीय प्रत्याशाओं को बुरी तरह झकझोरते हैं।

मंटो की अनेक कहानियाँ उनकी आत्मकथा का आभास देती हैं और वास्तव में वे हैं भी। आत्मकथा को कहानी में ढ़ालने की कला जितनी मंटो को आती है उतनी कला का दावा उर्दू, हिंदी के कम कहानीकार कर सकते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् भी लिखने वाले अधिकतर कहानीकारों के विषयों और शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। बहुत कम कहानी लेखक आज भी रचनात्मक स्तर पर क्रियाशील हैं। मंटो की मृत्यू ने उर्दू कहानी से एक वैयक्तिक शक्तिशाली आवाज को छीन लिया जिसे किसी भी बंधे-टिके फार्मुले या समीक्षात्मक सिद्धांत में बंद नहीं किया जा सकता। वे क्रांतिकारी थे लेकिन अधिनायकवाद के शत्रु। वे सेक्स पर लिखते थे। लेकिन फ्रायडियन परंपरा से हटकर। वे नीतिवादी नहीं थे, लेकिन मनुष्य और जीवन से उनके गहरे लगाव से कोई इंकार नहीं कर सकता। वह किसी वाद का अनुसरण नहीं करते थे। लेकिन फिर भी वे एक प्रतिबद्ध लेखक थे। आधुनिक उर्दू कहानी की समीक्षा करते हुए मंटो की कहानियों को इतिहास के सुपुर्द नहीं किया जा सकता क्योंकि उनका गहरा प्रभाव आधुनिक उर्दू कहानी पर पड़ा है जिसे चेतन या अवचेतन रुप से कई नए कहानी लेखक स्वीकार करते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात लिखी गईं मंटों की कहानियों में 'टोबा टेकसिंह', 'ठंडा गोश्त' और 'मोजेल' अत्यंत महत्वपुर्ण कहानियाँ हैं। सांप्रदायिक दंगो पर उनकी पुस्तक 'सियार हाशिए' एब्सर्ड साहित्य की ट्रेजि-कॉमेडी का उत्कृष्ट नमूना है।[4]

मंटो की कहानियों में समाज पर लीखा व्यंग है। बेकारी आदि समस्याओं को लेकर समाज की दुर्दशा और उसके घिनौने रुप का अनोखा प्रभावशाली चित्रण इन कहानियों में मिलता है। भाषा में तीखापन और पैने व्यंग का पुट है।

मंटो अपनी कहानियों में जीवन का यथार्थ रुप प्रदर्शित करते हैं। उनकी कहानियाँ जीवन से अतीत नहीं, उसके साथ गहरे में जुड़ी हैं। आगे उनकी कहानियों की विशेषताएँ प्रस्तुत की गई हैं।

1) मनोवैज्ञानिकता -

मंटो ने अपने समय के अन्य लेखकों की तरह अपनी कहानियों में पात्रों और स्थितियों का विवेचन-निरुपण करने के लिए मनोविज्ञान से लाभ उठाया है। लेकिन उनकी कुछ कहानियाँ सीधे-सीधे मनोवैज्ञानिक स्थितियों को लेकर लिखी गई हैं और उनके जरिए सम्बंधों के पल-पल बदलते मनोविज्ञान को उजागर किया है। उनकी कई कहानियों में मनोवैज्ञानिकता है। मनोवैज्ञानिकता उनकी कहानियों में भरी हुई है। मनोवैज्ञानिक स्थितियों और ग्रंथियों को पेश करने की उनकी शैली कहीं अमूर्त है, कहीं मूर्त और कहीं व्यक्तियों के

संबंधों में आश्चर्यजनक साहचर्य ढूँढनेवाली। उनकी कई कहानियों में साधारण तौर पर भी मनोवैज्ञानिकता आई हुई दिखाई देती है। मनोवैज्ञानिकता के कई पहलूओं को उन्होंने अपनी कहानियों में उजागर किया है। उनकी कहानियों में बाल मनोविज्ञान तथा यौन मनोविज्ञान की झलक दिखाई देती है। उनकी ज्यादातर कहानियों में यौन मनोविज्ञान दिखाई देता है और इसका चित्रण उन्होंने बखूबी किया है। मानवीय मनोवेगों का विश्लेषण करने में वे सफल हुए हैं। कलात्मकतासे विभिन्न मानसिकताओं का चित्रण उन्होंने किया है। मनोवैज्ञानिकता उनकी बहुत बडी विशेषता है, जो निम्नलिखित कहानियों में दिखाई देती है -

सुरमा

यहाँ मनोवैज्ञानिकता मूर्त रुप में आई हुई है। जो फहमीदा इस पात्र में दिखाई देती है। फहमीदा की जो चाहत है, एक चीज (सुरमा) जो उसके दिलो-दिमाग पर छाई हुई है। बचपनसे ही उसे सुरमा पसंद है। शादी के बाद भी वह चाहत को बर्करार रखती है। पति के साधारण आपत्ति पर उसे बहुत गहरी चोंट पहुँचती है और वह उसे पूर्ण रुप से त्यागती है। इच्छा को दबाने से इंसान के अंदर घुटन पैदा होती है, फहमीदा भी इसी घुटन में घुटती रहती है। बाद में जब उसके लड़के को डबल निमोनिया हो जाता है तो उसके दिलपर आघात होता है। उसका प्यारा लड़का अस्पताल में मर जाता है। यह धक्का वह सहन नहीं कर पाती है। उसपर देर तक पागलपन की स्थिती बनी रहती है, उसके होश-व-हवास गुम हो जाते हैं। वह कोयले उठाती, उन्हें पीसती और अपने चेहरेपर मलना शुरू कर देती है। डॉक्टरों की दवाओंका भी उसपर कोई परिणाम नहीं होता है। उसके मनमस्तिष्क में सुरमा ही सुरमा छाया रहता है। वह हर बात कालिख के साथ ही सोचती रहती है।

अपने पति को सुरमा लाने के लिए वह कहती है। उसके द्‌वारा लाया हुआ सुरमा उसे पसंद नहीं आता तो खुद बाजार में जाती है और पसंद का सुरमा खरीदकर लाती है। उस सुरमे को अपनी आँखों में लगाती है और सो जाती है, जिस तरह वह अपने बेटे आसम के पास सोती थी। सुबह पति के जगाने की कोशिश पर वह मुर्दा पडी रहती है। उसकी बगल में एक गुड़िया रखी है, जिसकी आँखें सुरमे से भरपूर होती हैं। इस प्रकार फहमीदा की मन:स्थिति को मनोवैज्ञानिकात के द्‌वारा प्रकट किया है।

फुँदने

मंटो की यह कहानी पूर्ण मनोवैज्ञानिक है। मनोवैज्ञानिक ढंग से किस्सागोई की गई है। कहानी में एक कोठी के तथा परिवार के सदस्यों को बुना गया है। कहानी सिर्फ एक दूसरे में गुँथती जाती है। हर पात्र को मनोवैज्ञानिकता का सहारा लेकर दिखाया गया है। यौन

मनोवैज्ञानिकता की झलक भी दिखाई देती है। कहानी के अंत में अकेलेपन और बैचेनी से झटपटाती नारी कि विकृत मानसिकता तथा घुटन को चित्रित किया गया है। बनावटी जिंदगी, अकेलापन, रिश्तों का खोखलापन, बैचेनी, घुटन, मानसिक विकृति आदियों का चित्रण मनोवैज्ञानिकता से किया गया है। कुँदने इस प्रतीक के माध्यम से शायद लेखक उच्चवर्गियों की रूखी और बेकार जिंदगी तथा ऐसे माहौल में व्याप्त घुटन और मानसिक विकृति जो जान लेने पे तुली होती है, मनोवैज्ञानिकता से शब्दोंद्वारा सामने रखने की कोशिश की है। इस कहानी में एक पूरे परिवार की मानसिकता और मानसिक विकृति से ग्रस्त नारी तथा उसने बनाए कुँदनेद्वारा ही गले में अंदर धँसकर उसकी हत्या आदि को मनोवैज्ञानिक ढंग से दिखाया गया है।

मुसटेन वाला -

इस कहानी में व्यक्तियों के संबंधों में आश्चर्यजनक साहचर्य ढूँढनेवाली मानसिकता को मनोवैज्ञानिकता से पेश किया गया है। लेखक के मित्र, जैदी साहब को एक बिल्लेसे डर है जो अचानक उनके घर में आया हुआ है। उनका मानना है कि वह बहुतही अलग किस्म का विचित्र बिल्ला है। साधारण बिल्ले से वह बिलकुल ही अलग है और डरावना भी। उनके कईं उपायों के बावजूद यह पहेली उन्हें सुलझती नहीं। एक दिन जब लेखक और उनकी पत्नी उनके घर पर जाते हैं तब लेखक की पत्नी द्वारा उस बिल्ले की हरकत पर 'बदमाश' कहने पर और इस शब्दपर गौर करनेसे जैदी साहब की पहेली हल हो जाती है। वह उस बिल्ले का संबंध मुसटेनवाले से लगाते है जो स्कूली दिनों में स्कूल के बाहर पेड़ के नीचे बैठता था। उनकी राय में बिल्ले की शक्ल मुसटेनवाले से मिलती थी। दोनों की आदतें भी वही थीं। और लडकपन में जैदी सुंदर होने के कारण उसपर मुसटेनवाल की खास नजर थी। एक दिन जब मुसटेनवाले ने जैदी को खत पढ़ने के लिए कहा तो वह घबराकर वहाँ से भागा था और उसे दो-तीन दिन तक तेज बुखार चढ़ा। इसलिए वे उस बिल्ले का संबंध मुसटेनवाले से लगाते है। यह बड़ी ही विचित्र बात है और हास्यास्पद भी। ऐसी मानसिकता को लेखक ने बड़े ही व्यंगपूर्ण ढ़ंगसे तथा रोचकता और मनोवैज्ञानिकता से पेश किया है।

किर्चें और किर्चियाँ

ऐसी कई कहानियोंद्वारा लेखक ने अपनी राय बयान की है। अपने अनुभव की तथा अपने मन की बातें कहीं हैं। प्रस्तुत कहानी में भी कश्मीर प्रश्न से जुड़ी उनकी मानसिकता को उन्होंने बताया है। कहानी में मंटो खुद भी है। लोगों और खुद लेखक की कश्मीर संबंधी मानसिकता को उजागर किया गया है। लेखक ने बहुतसी अपने मन की बातें गढ़ी हैं। कश्मीर किसका है? तथा उसकी आझादी के संबंध में मनोवैज्ञानिकता से चर्चा की

गई है। बटवारे के माहौल का जो असर लेखक के दिलोदिमाग में हुआ था, उसीका असर यह कहानी है। खुद कश्मीर में पैदा होनेवालों को भी उसकी सरहदों की पाबंदी लगाई गई। बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिकता द्वारा अपने मन की बातों को लेखक ने यहाँ उघाडकर रखा है।

नारा

मकान-मालिक से मिलने जाने से पहले और उसके गालियाँ देने के बाद की केशवलाल जो एक मुँगफली बेचनेवाला है, मन:स्थिति को कहानी में मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से व्यक्त किया गया है। किराए के लिए दो महिनों की मुहल्लत माँगने केशवलाल सेठ के पास जाता है। इस मजबूरी से भी उसके अभिमान को ठेंच पहुँचती है, मगर वह विवश है। वहाँ सेठ के द्वारा गालियाँ देने पर जो उसके मन की स्थिति होती है, उसके अंदर जो तुफान मच जाता है, उसे कहानी बयान करती है। पूँजीपतियों द्वारा किस तरह सामान्य जन को दबाया जाता है, उनपर रोब जमाया जाता है तथा उनके अभिमान को कुचला जाता है और ठेंच खाए अभिमानी व्यक्ति की जो मानसिकता होती है, यही केशवलाल की मानसिकता द्वारा दिखाया गया है। पूरी कहानी में सेठद्वारा दी हुई गालियों की वजह से जो केशवलाल के मन में उथलपुथल मच जाती है, वह झटपटाता रहता है और उसके अंदर का मचलता तूफान खौलकर एक नारे के रूप में बाहर आता है, यहीं दिखाया गया है। उसमें सेठ को उठाकर पटकने की क्षमता थी, लेकिन मजबूरी में वह कुछ नहीं कर सकता था। दो गालियों की वजह से हुई उसकी मानसिकता को लेखक ने बहुत मार्मिकता से खोला है, "उसमें हौसला न था। कितने दुख की बात है कि उसकी सारी ताकत ठंडी पड़ गई थी। ये गालियाँ... वह उन गालियों को क्या कहता? उन गालियों ने उसकी चौड़ी छाती पर रोलर सा फेर दिया था... सिर्फ दो गालियों ने ... हालाँकि पिछले हिंदू-मुस्लिम दंगे मे एक हिंदू ने उसे मुसलमान समझ कर लाठियों से बहुत पीटा था और अधमुआ कर दिया था, लेकिन उसे इतनी कमजोरी महसूस न हुई थी। केशवलाल, खारीसिंगवाला, जो अपने दोस्तों को बड़े गर्व के साथ कहा करता था कि वह कभी बीमार नहीं पड़ा, आज यों चल रहा था, जैसे बरसों का रोगी हो! और यह रोग किसने पैदा किया था? दो गालियों ने।"[5] उसका मन क्रोध और द्वेष से भरा हुआ था। उसके मन में मचलता वह तूफान आखिरकार एक नारे के रुप में बाहर पड़ता है। केशवलाल की मानसिकता को बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से लेखक ने पेश किया है।

खुशिया

मंटो व्यक्तिचित्रों के बादशाह हैं। उन्होंने कई चरित्रों की मानसिकताओं को खोल दिया है। फिर वह केशवलाल हो, सुगंधी हो या फिर खुशिया हो। अलग-अलग परिवेशों में, स्थितियों में पात्रों के मन की अवस्था को उन्होंने उजागर किया है।

प्रस्तुत कहानी में खुशिया एक दलाल (भड़वा) है जो वेश्याओं की दलाली करता है। कांता जो एक वेश्या है और उसका दलाल खुशिया है। कांता के शब्दों से खुशिया का मन घायल हो जाता है। एकही पेशे में होनेसे उसे वह गैर न समझकर नंगी सामने आती है, मानो इससे उसे कुछ फर्क नहीं पडनेवाला है। एक मर्द के सामने, फिर वह दलाल ही क्यों न हो, एक औरत के नंगे सामने आने से, कांता की इस हरकत से अपनी मर्दानगी पर शंका करने जैसा लगता है। उसकी नजर में कांता की यह हरकत उसके मर्दानगी को चुनौती देनेवाली लगती है। वह उसे शक की निगाहों से देखता है और उसके मन में उथल-पुथल मच जाती है। मनोवैज्ञानिकता से उसके मन में चल रहे इस उथल-पुथल को लेखक ने सामने रखा है। एक औरत ने एक मर्द से जिस तरह से पर्दा हटा लिया था, इसे वह अपमान समझता है और बर्दाश्त नहीं कर पाता है। खुशिया अपनी हैरत को किसी न किसी हीले से दूर कर देता है। मगर यहाँ मुसीबत यह आन पड़ी थी कि कांताने मुस्कराकर कहा था, ''जब तुमने कहा खुशिया है, तो मैंने सोचा, अपना खुशिया ही तो है, आने दो....'' बस यही बात उसे खाए जा रही थी। उसके मन में चल रही हलचल को लेखक ने बताया है, ''कांता ने उसे क्या समझ दिया था? क्या उसमें वे सारी बातें नहीं थीं, जो एक नौजवान मर्द में होती हैं? इसमें कोई शक नहीं कि वह कांता को एकाएक नंगधडंग देखकर बहुत घबरा गया था लेकिन चोर निगाहों से क्या उसने कांता की उन चीजों का जायजा नहीं लिया था, जो रोजाना इस्तेमाल के बावजूद असली हालत पर कायम थीं। क्या चकित रह जाने के बावजूद, उसके दिमाग में यह खयाल नहीं आया था कि दस रुपये में कांता बिलकुल महंगी नहीं और दशहरे के दिन बैंक का वह बाबू जो दो रुपये की रिश्वत न मिलने पर वापस चला गया था, बिलकुल गधा था? और... इन सबके उपर, क्या एक क्षण के लिए उसके सारे पुट्टों में एक अजीब किस्म का तनाव नहीं पैदा हो गया था? और उसने एक ऐसी अंगड़ाई नहीं लेनी चाही थी जिससे उसकी हड्डियाँ तक चटखने लगें....? फिर क्या वजह थी कि मंगलौर की उस साँवली छोकरी ने उसको मर्द न समझा और सिर्फ... सिर्फ खुशिया समझकर उसको अपना सब कुछ देखने दिया?''[6] और इस अपमान का बदला लेने के लिए वह उसपे बरस पड़ता है। इस घटना के बाद वह दलाली भी छोड़ता है। खुशिया के मन की स्थिति को मनोवैज्ञानिकता से लेखक ने सामने रखा है।

एक खत

इस कहानी में लेखक ने खुद की बातों को मनोवैज्ञानिकता से रोशन किया है। दोस्त के एक खत उनपर आरोप लगाएँ गए हैं, उसके उत्तरस्वरूप कहानी कही गई है। लेखक ने इसमें अंतरतम के विविध पैलूओं को, विभिन्न तरंगों को सामने लाया है। लेखक ने अपने

पूरे मन को खोल कर रख दिया है। साथ ही औरत और मर्द का रिश्ता, प्यार और हवस में फर्क आदि बाते भी बड़ी रोचकता से बताई गई हैं। उनके प्यार संबंधी विचार बिलकुल सोचनीय है। वे कहते हैं, ''औरत और मर्द - और उनका आपसी रिश्ता - हर बालिग आदमी को मालूम है; लेकिन माफ करना, यह रिश्ता मेरी नजरों में पुराना हो चुका है - इसमें सरासर हैवानियत है। मैं पूछता हूँ, अगर मर्द को अपनी मुहब्बत का केंद्र, किसी औरत को ही बनाना है तो वह इंसानियत के इस पाकीजा जज्बे में हैवानियत को क्यों जगह दे?... क्या इसके बिना प्यार-मुहब्बत नहीं हो सकती? ... क्या जिस्मानी मशक्कत का नाम मुहब्बत है?''[7] उनकी राय में सिर्फ शारीरिक संबंध ही प्यार नहीं है। एक खत के उत्तरस्वरूप अपनी बातों को मनोवैज्ञानिकता से लेखक ने बताया है।

नया कानून

इस कहानी में मंगू कोचवान की मानसिकता का प्रकाशन किया गया है। एक एप्रैल से नये कानून के लागू होने की बात मंगू सुनता है। मंगू को इस दिन का बेकरारी से इंतजार था। उसके लिए नये कानून का अर्थ है - मेरा कानून। आम लोगों का कानून। उसे लागू करने वाला भी मंगू। उसके दिलो-दिमाग में यह नया कानून घर कर बैठा था। वह एक अजीब ही दुनिया में रहता है। एक अप्रैल के दिन एक गोरा, जिससे मंगू की पिछली बार झिकझिक हो चुकी थी, दीखता है तो मंगू उसे तांगे में बिठाता है। अनाप-शनाप किराया मांगता है, गोरे के ऐतराज करने पर चाबुक से पीटने लगता है। सिपाही उसे थाने ले जाते हैं। रास्ते में मंगू 'नया कानून ! नया कानून !' चिल्लाता रहता है और उसे ले जाकर हवालात में बंद किया जाता है। मंगू इस मानसिक झटके से पागल हो जाता है। बहुत गाढ़े रंग के सपने जब टूटते हैं तो ऐसा अवसाद पैदा होता है। कि इंसान पागल हो जाता है। ऐसी ही स्थिति टोबा टेकसिंह की भी है। इस प्रकार मंगू के मानसिकता का सूक्ष्मता से मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखक ने किया है।

हतक

सुगंधी मंटो की बहुतही सशक्त वेश्या-नारी पात्र है। सुगंधी इस वेश्या-पात्र को उन्होंने अपनी पूरी ताकत से चित्रित किया है, जो वेश्या जीवन का बेहतरीन आईना है। वेश्या-नारी के मन को सुगंधी द्वारा खोलकर समाजसम्मुख रखा है। इस कहानी में सुगंधी इस वेश्या-नारी की मानसिकता का चित्रण किया गया है। मनोवैज्ञानिकता उसके मन, परिवेश तथा स्थितियाँ इन सब में ढ़ाली हुई नजर आती है। सेठ के ठुकराने से उसके मन में जो विचारों का चक्र शुरू होता है, जो मानसिक अंतर्द्वंद्व चलता रहता है, उसका सही वर्णन बड़ेही मनोवैज्ञानिकता से लेखक ने किया है। ऐसे बहुत से ब्योरे कहानी में बिखरे पड़े हैं जो सुगंधी के मन में चल रही उथल-पुथल को सामने लाते हैं। उन्हीं में से कुछ इस प्रकार है -

''मुझ में क्या बुराई है?'' सुगंधी ने यह प्रश्न उस प्रत्येक चीज से किया था, जो उसकी आँखों के सामने थी। गैस के अंधे लैम्प, लोहे के खम्बे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और सड़क की उखड़ी हुई बजरी - इन सब चीजों की तरफ उसने बारी-बारी से देखा, फिर आसमान की तरफ निगाहें उठायीं, जो उसके उपर झुका हुआ था, मगर सुगंधी को कोई जवाब न मिला। जवाब उसके अंदर मौजूद था। वह जानती थी कि वह बुरी नहीं, अच्छी है; परंतु वह चाहती थी कि कोई इसका समर्थन करे। कोई... कोई... इस वक्त कोई उसके कंधों पर हाथ रखकर केवल इतना कह दे - ''सुगंधी, कौन कहता है, तू बुरी है। जो तुझे बुरा कहे वह स्वयं बुरा है।'' - नहीं, यह करने की कोई खास जरुरत नहीं थी। किसी का इतना कह देना ही काफी था, ''सुगंधी, तू बहुत अच्छी है।''[8]

इसी सोच में डूबी सुगंधी की तीव्र आकांक्षा थी कि वह मोटर फिर एक बार आए और फिर अचानक सुगंधी कह उठती है, ''न आए - बला से - मैं जान क्यों हल्कान करूँ - घर चलते हैं और लम्बी तानकर सोते है। इन झगडों में रखा ही क्या है। मुफ्त का दर्द-ए-सिर ही तो है। चल सुगंधी, घर चल - ठंडे पानी का एक डोंगा पी और थोडा - सा बाम मलकर सो जा - फर्स्ट क्लास नींद आएगी और सब ठीक हो जाएगा - सेठ और उस मोटारी की ऐसी-तैसी।''[9]

कहानी के आखिर में जब वह माधो को भगाती है तब सुगंधी की मन:स्थिति को बड़े ही मनोवैज्ञानिकता से लेखक ने प्रकट किया है, ''उसके खारिश वाले कुत्ते ने भौंक-भौंककर माधो को कमरे से बाहर निकाल दिया। उसे सीढ़ियाँ उतार कर जब कुत्ता दुम हिलाता सुगंधी के पास वापस आया और उसके कदमों के पास बैठकर कान फड़फड़ाने लगा तो सुगंधी चौंकी - उसने अपने चारों तरफ एक भयावह सन्नाटा देखा - ऐसा सन्नाटा, जो उसने पहले कभी न देखा था। उसे ऐसा लगा कि प्रत्येक वस्तु खाली है - जैसे मुसाफिरों से लदी हुई रेलगाड़ी स्टेशनों पर मुसाफिर उतारकर अब लोहे के शेड़ में बिल्कुल अकेली खड़ी है... यह शून्य जो अचानक सुगंधी के अंदर पैदा हो गया था, उसे बहुत तकलीफ दे रहा था। उसने काफी देर तक इस शून्य को भरने की कोशिश की, मगर व्यर्थ। वह एक ही समय में असंख्य विचारों को अपने दिमाग में ठोंसती थी, मगर बिल्कुल छलनी-सा हिसाब था। इधर दिमाग को पुरा करती थी, उधर वह खाली हो जाता था।

बहुत देर तक वह बेंत की कुर्सी पर बैठी रही। सोच-विचार के बाद भी जब उसको अपना मन परचाने का कोई तरीका न मिला तो उसने अपने खारिशजदा कुत्ते को गोद में उठाया और सागवान के चौड़े पलंग पर उसे पहलू में लिटा कर सो गयी।''[10]

डरपोक

जावेद वेश्यागमन करना चाहता है लेकिन वेश्यावस्ती तक जाने से डरता है। जावेद के इसी ड़र को कहानी बताती है। लालटेन जो उसके बीच में दीवार बनकर खड़ी उस प्रतीक के माध्यम से जावेद की मनोदशा को व्यक्त किया गया है।

''जावेद अपने आप से और भी नफरत करने लगा - तुम... तुम... तुम क्या हो? मैं पूछता हूँ, आखिर तुम क्या हो?... न तुम यह हो, न तुम वह हो... न तुम इंसान हो, न तुम हैवान... तुम्हारी समझ-बूझ, तुम्हारी अक्ल और सोच, आज सब धरी-की-धरी रह गयी। तीन शराबी आते हैं। तुम्हारी तरह उनके दिल में इरादा नहीं होता, लेकिन बेधड़क उस वेश्या से वाहियात बातें करते हैं और हँसते, ठहाके लगाते कोठे पर चढ़ जाते हैं, जैसे पतंग उड़ाने जा रहे हों...और तुम... और तुम, जो कि अच्छी तरह समझते हो कि तुम्हें क्या करना है, यों बेवकूफों की तरह बीच बाजार में खड़े हो और एक बेजान लालटेन से खौफ खा रहे हो। तुम्हारा इरादा इतना साफ और खुला है, लेकिन फिर भी तुम्हारे कदम आगे नहीं बढ़ते... लानत हो तुम पर।''[11]

उपर्युक्त वाक्यों में जावेद की मनस्थिति में मनोवैज्ञानिकता दिखाई देती है।

इसी तरह उनकी 'मम्मदभाई', 'काली सलवार', 'राखेलावन', ' टोबा टेकसिंह', 'खोल दो' आदी कहानियों में भी मनोवैज्ञानिकता दिखाई देती है।

बाल-मनोविज्ञान

छोटे बच्चों की मानसिकता जानकर प्रकट करने के लिए उनका सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करना जरूरी बन पड़ता है। उपर से दिखने वाले उनके सिधेपन तथा भोलेपन के अंदर कई जटिलताओं का समावेश होता है। उनकी साधारणसी बातों में भी बहुत बड़ी बात छुपी होती है। उनकी बाते, आचरण तथा मनोदशा प्रकट करने के लिए स्वयं उनकी जगह लेनी पड़ती है या खुद को उस उम्र में ले जाना पड़ता है। उनके मन की अंदरूनी गहराईयों को जानकर ही उसे सामने लाया जा सकता है। उनके कई प्रश्न समस्या बनकर खड़े होते है। वह अंजान तो होते हैं लेकिन उनकी हरकतों से कई बातों का प्रकाशन भी होता है। लेखक ने निम्नलिखित कहानियों में बालमन का सूक्ष्म अंकन कर उन्हें प्रस्तुत किया है।

मंतर

बड़ों की हरकतों का असर छोटे बच्चों पर रहता है। बच्चे वही सीखते हैं जो उनके सामने घटित होता रहता है, वे बड़ों का अनुकरण करते रहते हैं। प्रस्तुत कहानी में नन्हा राम बहुतही शरारती तो है लेकिन साथ ही तीव्र बुद्धिमान भी है। उसके माँ-बाप उससे तंग आ

चुके है। एक बार रसोईघर से टमाटर चुराने का आरोप उसपे किया जाता है। उसपे सिधी-स्पष्टता से उसका उत्तर होता है, "पर टमाटर तो हमारे अपने थे- मेरी माताजी के।"[12] साफ जाहीर है घर उसका है, घर के सदस्य उसके है और घरमें जो भी चीजें मौजूद है वह किसीभी सदस्य के हों, वह उसे अपना ही मानता है, तो उसके बालमन के हिसाब से अपने ही घर में चोरी कैसी ? उसके पिता शंकराचार्य उसे उदाहरण के द्वारा समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन उसके बालमन के स्पष्ट और सीधेपन में वह मात खाकर रहते है।

राम शरारती होने के कारण वह ऊटपटांग हरकते हमेशा करता रहता है। रेल से पूना जाने के वक्त का और एक किस्सा कहानी में लेखक ने बताया है। राम खिड़की के पास बैठा हुआ है। शंकराचार्यजी के कितनेही बताने पर वह शरारतें करता रहता है, एक जगह चुप नहीं बैठता है। वह टोपी उतार कर उसकी टांगों पर रख देते लेकिन फौरन ही वह फिर उसे सिर पर रख लेता है। उन्होंने उसे कुछ समझने से पहले, चालाकि से टोपी ली और पलक झपकने में वह टोपी उनकी सीट के नीचे रख दी। राम को लगा टोपी खिड़की से बाहर गिर गई और वह रोने लगा। फिर उसे फिर न पहनने की शर्त ड़ालकर झूठमूठ मंत्र पढ़कर उन्होंने वह फिरसे उसे ला दी। बाद में जब वे अखबार पढ़ने में व्यस्त थे तो राम ने यही हरकत दुहराई। राम ने उनके कागज बाहर फेंक दिए और उनसे मंत्र पढ़ने को कहा। शंकराचार्य जी के होश उड़ गए। उन्होंने मन में अब नुकसान और नतीजे और उपाय की आगे बात सोच रखी। उन्हें रामपर बहुत क्रोध आ रहा था। फिर राम ने उन्हें आँखे बंद करने को कहा और मंत्र पढ़ना शुरू किया और कागज जो उसने भी छुपाए थे सामने ला दिए। इस तरह राम की मानसिकता को जो ज्यादातर नन्हें बच्चों की मानसिकता होती है, जो उनके सामने दिखाया जाता है वही वह सीखते हैं, बुद्धि को न पहचान के या उन्हें छोटा समझके उनके सामने गलत बातें रख दी जाएँ तो वे भी वही सीखते हैं, उसे दुहराते हैं और यही लेखक ने राम इस पात्रद्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से कहा है।

तमाशा

यह कहानी जालियांवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता के घृणित नरसंहार से प्रेरित मानी जाती है। स्थिति की भयाक्रांतता को खालिद इस छोटे बच्चे की मानसिकता द्वारा दिखाया गया है। इस कहानी में खालिद के शहर के उपर उड़ते हवाई जहाजों से उसे खौफ पैदा होता है। वह कहता है, "अब्बा, ये जहाज बहुत खौफनाक है। आप नहीं जानते ये किसी न किसी दिन हमारे घर पर गोला फेंक देंगे। कल सुबह मामा अम्मीजान से कह रहे थे कि इन जहाज वालों के पास बहुत-से गोले हैं। अब्बा, अगर उन्होंने इस किस्म की कोई शरारत की तो याद रखें, मेरे पास भी एक बंदूक है, वही जो आपने मुझे

पिछली ईद पर लाकर दी थी।''[13] खालिद के बालमन का चित्रण मार्मिक शब्दों में लेखक ने किया है।

अंदर ही अंदर सुलगते शहर पर हवाई जहाज परचे गिराते हैं। शहर खूनी हादसे (जालियांवाला नरसंहार) से बैचेन है। सशस्त्र पुलिस बल गश्त लगा रहे हैं। जलसों के आयोजन की सरकारी मनाई है फिर भी शहर के लोग बादशाह के मना करने पर भी शाम के करीब एक आम जलसा करनेवाले हैं। डर है कि एक और खौफनाक हादसा कहीं होकर न रहे। खालिद के उस वक्त की मानसिकता को सही शब्दों में अंकित किया गया है, ''वह सख्त हैरान था कि दुकानें क्यों बंद रहती हैं। इस मसले के हल के लिए उसने अपने नन्हे दिमाग पर बहुत जोर दिया मगर कोई नतीजा न निकाल सका। बहुत सोच-विचार के बाद उसने सोचा कि लोगोंने वह तमाशा देखने की खातिर, जिसके इश्तहार जहाज बांट रहे थे, दुकानें बंद कर रखी हैं। अब उसने खयाल किया कि वह कोई निहायत ही दिलचस्प तमाशा होगा, जिसके लिए तमाम बाजार बंद हैं। इस ख्याल ने खालिद को सख्त बैचेन कर दिया और वह उस वक्त का बेकरारी से इंतजार करने लगा जब अब्बा उसे तमाशा दिखाने ले चलेंगे।'' [14]

शहर में गोलीबारी होने लगती है। खालिद समझता है - हवाई जहाज से गिरे परचों में किसी तमाशे की सूचना होगी। वही तमाशा शुरू हो गया है। बाजार में चली गोली से एक घायल लड़के को अपने मकान के सामने देख खालिद रोने लगता है। घरवाले उसे बहला देते हैं कि लड़के की पिटाई स्कूल में हुई है। उसने सबक याद नहीं किया था। खालिद सोते वक्त दुआ करता है कि पहाड़ा याद न करने की वजह से उसकी पिटाई न हो। उसकी दुआ है, ''अल्लाह मियाँ, मैं दुआ करता हूँ कि तू उस मास्टर को जिसने इस लड़के को पीटा है, अच्छी तरह सजा दे और उस छड़ी को छीन ले जिसके इस्तेमाल से खून निकल आता है... मैंने पहाड़े याद नहीं किए इसलिए मुझे ड़र है कि कहीं वहीं छड़ी मेरे उस्ताद के हाथ न आ जाए। अगर तुमने मेरी बात न मानी तो फिर मैं भी तुमसे नहीं बोलूँगा।'' [15] इस तरह लेखक ने उपर्युक्त कहानी में खालिद पात्र के जरिए बाल-मनोवैज्ञानिकता का अंकन कर पेश किया है।

यौन-मनोवैज्ञानिकता

यौन-मनोवैज्ञानिकता को लेकर मंटो ने बहुतसी कहानियाँ लिखी हैं। कई यौन-भावनाओं का चित्रण मंटो ने अपनी कहानियों में किया है। उनकी कहाहनयों में 'सेक्स' एक प्रमुख विशेषता है। सेक्स के कई पहलूओं को लेकर उन्होंने अपना मतप्रदर्शन किया है। अपनी बातों को सामने रखा है। अत: उनकी निम्नलिखित कहानियों में यौन-मनोवैज्ञानिकता दिखाई देती है।

एक खत

इस कहानी में लेखक ने अपनी कश्मीर की जिंदगी की घटना बताई है। मित्र के खत के आरोप के प्रत्युत्तर में वे बताते हैं कि उन्होंने उस कश्मिरी पहाडी लड़की जिसका नाम वजीर था और उनका वहाँ आना-जाना रहता था, बरबाद नहीं किया। वजीर तो पहले ही बरबाद हो चुकी थी। जिस्मानी संबंधों को ही वह प्यार समझती थी और उसी में वह खोई हुई थी। लेखक ने खुलासा किया है, ''अगर 'बरबादी' से तुम्हारा मतलब 'जिस्मानी बरबादी' है तो वह पहले ही से बरबाद हो चुकी थी और वह इसी बरबादी में अपनी खुशी तलाश करती थी। जवानी के नशे में मस्त, उसने इस गलत खयाल को अपने दिमाग में जगह दे रखी थी कि जिंदगी का असली आनंद और मजा अपना खून खौलाने में है और वह इस मकसद के लिए हर वक्त ईंधन चुनती रहती थी। यह तबाही भरा खयाल उसके दिमाग में कैसे पैदा हुआ, इसके बारे में बहुत कुछ कहा जाता है। हमारी जाति में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जिनका काम सिर्फ भोली-भाली लड़कियों से खेलना होता है। जहाँ तक मेरा अपना खयाल है, वजीर उस चीज का शिकार थी, जिसे सभ्यता और संस्कृति का नाम दिया जाता है।''[16]

लेखक ने वजीर की यौन-भावनाओं को कैद किया है और उसका सही बयान किया है, ''उसके गीले होठों पर मुस्कराहट खेल रही थी और उसकी आँखों से जो कुछ बाहर झाँक रहा था, उसको मेरा कलम बयान करने में असमर्थ है। मेरा खयाल है, उस वक्त उसके दिल में यह एहसास करवटें ले रहा था कि उसके सामने एक मर्द बैठा है और वह औरत है - जवान औरत - जोबन की उमंगों का उबलता हुआ चश्मा!''[17]

उपर्युक्त लेखक की एहसासों में यौन-मनोवैज्ञानिकता की झलक दिखाई देती है।

स्वराज्य के लिए

जालियांवाला बाग में गुलाम अली इस बात का ऐलान करता है कि निगार और वह, बच्चे पैदा नहीं करेंगे और इस बात से उसने एक अजीब तरह की खुशी महसूस की थी। बाबाजी के आदर्शों पर चलने के लिए, स्वराज्य के लिए उन्होंने अपनी यौन-भावनाओं को दबाने का फैसला किया लेकिन इससे उनके मन पर बहुत बुरे असर होने शुरू हो गए। इस बात का उन्हें तकलीफ देह एहसास होने लगा। इस दौरान वचन निभाते-निभाते इनकी हालत का गुलाम अली के लब्जों द्वारा बयान किया गया है। उसकी सूक्ष्म मनोदशा को खोलकर रख दिया गया है। गुलाम अली के लब्जों में उसकी सही मनोदशा व्यक्त होती है, ''पहले-पहले तो हम ठीक-ठीक थे। मेरा मतलब है, शुरू-शुरू में हमें इसका बिलकुल खयाल नहीं था कि थोड़ी देर बाद हम बेचैन हो जाएँगे... यानी एक आँख माँग करने लगी कि दूसरी आँख

भी हो... शुरू में हम दोनों ने महसूस किया था, जैसे हम तंदुरूस्त हो रहे हैं, हमारी तंदुरूस्ती बढ़ रही है... निगार का चेहरा निखर गया था, उसकी आँखों में चमक पैदा हो गई थी। मेरे अंगों से भी वह सूखा-सा तनाव दूर हो गया, जो पहले मुझे तकलीफ दिया करता था। लेकिन अहिस्ता-अहिस्ता फिर हम दोनों पर, अजीब-सी मुर्दनी छाने लगी। एकही बरस में हम दोनों रबड़ के पुतले-से बन गए। मेरा एहसास ज्यादा तीखा था। तुम यकीन नहीं करोगे, लेकिन खुदा की कसम, उस वक्त, जब मैं बाजू का गोश्त चुटकी में लेता तो बिलकुल रबड़ मालूम होता। ऐसा लगता था कि अंदर खून की नसें नहीं हैं। निगार की हालत, जहाँ तक मेरा खयाल है, मुझसे अलग थी। उसके सोचने का ढंग और था। वह माँ बनना चाहती थी। गली में जब भी किसी के यहाँ कोई बच्चा पैदा होता तो उसे बहुतसी आहें छिप-छिपकर, अपने सीने के अंदर दबानी पड़ती थीं। लेकिन मुझे बच्चों का कोई खयाल नहीं था। बच्चे न हुए तो क्या है? दुनिया में लाखों इंसान मौजूद हैं, जिनके यहाँ औलाद नहीं होती। यह कितनी बड़ी बात है कि मैं अपने अहद पर कायम हूँ? इससे तस्कीन तो काफी हो जाती थी, मगर मेरे दिमाग पर जब रबड़ का महीन-महीन जाला तनने लगा तो मेरी घबराहट बढ़ गई... मैं हर वक्त सोचने लगा और इसका नतीजा यह हुआ कि मेरे दिमाग के साथ रबड़ की छूत चिमट गई। रोटी खाता तो लुकमे दाँतों के नीचे कचकचाने लगते।''[18]

गुलाम अली की मनोदशा द्वारा यौन-मनोविज्ञान का दर्शन लेकख ने किया है।

मेरा नाम राधा है

इस कहानी में नीलम जिसका असली नाम राधा है तथा राजकिशोर इन चरित्रोंपर प्रकाश ड़ाला गया है। फिल्मी दुनिया की बनावटगिरी का दर्शन यहाँ लेखक ने किया है। राजकिशोर को सच्चरित्र दिखाया गया है, वह नीलम को बहन मानता है लेकिन अंदरूनी सच्चाई कुछ और ही है। नीलम की हरकत उनके बीच के शारीरिक तथा मानसिक सच्चाईयों को खोल कर रख देती है। नीलम के मन में दबी क्रोध, वासना विकृतावस्था धारण कर लेती है और वह राजकिशोर पर बरस पड़ती है। दोनों घायल होते हैं। सेक्स की घोर विकृतावस्था यहाँ दिखाई देती है जिसमें दोनों एक दूसरे को नोचने पे तुले हुए हैं। इस विकृति को यौन-मनोविज्ञान के जरिए लेखक ने दिखाया है।

ब्लाउज

यह कहानी मोमिन इस यौवन के शुरूवाती दौर में आनेवाले लड़के की है। इस दौर में उसमें जो शारीरिक तथा मानसिक बदलाव हो रहे थे और जिसकी पहचान से वह अभी अनजान था इसका सूक्ष्म वर्णन लेखक ने प्रस्तुत किया है। शकीला ब्लाऊज बना रही है

और उसके लिए मोमीन की मदत लेती है। ब्लाऊज के तैयार होने दौरान की उसकी मानसिकता को लेखक ने बताया है। सेक्स के एहसास से वह बैचेन है। तैयार ब्लाऊज पर जब वह हाथ फेरता है तो उसे लगता है कि कोई उसके जिस्म के मुलायम रोयें पर हौले-हौले, बिलकुल हवाई लम्ज की तरह हाथ फेर रहा है।

''रात को जब वह सोया तो उसने कई ऊटपटांग सपने देखे - डिप्टी साहब ने उसे पत्थर के कोयलों का एक बड़ा ढेर कूटने को कहा। जब उसने एक कोयला उठाया और उस पर हथौड़े की चोट लगायी तो वह नर्म-नर्म बालों का एक गुच्छा बन गया - ये काली खांड के महीन-महीन तार थे, जिनका गोला बना हुआ था। फिर ये गोले, काले रंग के गुब्बारे बनकर, हवा में उड़ने लगे- बहुत उपर जाकर ये फटने लगे।... फिर आँधी आ गयी और मोमीन की रूमी टोपी का कुँदना कहीं गायब हो गया - वह फुँदने की तलाश में निकला - देखी और अनदेखी जगहों में घूमता रहा... नये लट्ठे की बू भी कहीं से आनी शुरू हुई। फिर न जाने क्या हुआ।... एक काली साटन के ब्लाउज पर उसका हाथ पड़ा... कुछ देर तक वह किसी धड़कती हुई चीज पर अपना हाथ फेरता रहा। फिर एकाएक हड़बड़ा कर उठ बैठा। थोड़ी देर तक वह कुछ समझ न सका कि क्या हो गया है। इसके बाद उसे ड़र, हैरानी और एक अनोखी टीस का एहसास हुआ। उसकी हालत उस वक्त अजीबोगरीब थी... पहले उसे एक तकलीफदेह गर्मी-सी महसूस हुई। फिर कुछ लम्हों के बाद एक ठण्डी-सी लहर उसके जिस्म पर रेंगने लगी।''[19]
मोमीन की इस स्थिति का चित्रण लेखक ने यौन-मनोवैज्ञानिकता से किया है।

ऊपर, नीचे और दरमियान

इस कहानी में मियाँ-बेगम, डॉक्टर पति-पत्नी तथा नौकर-नौकरानी के आपस में संवाद बुने गए हैं। सांकेतिक शब्दोंद्वारा यहाँ सेक्स की प्रचिति दिखाई देती है। मियाँ-बेगम में उम्र ढ़लने के बाद भी, सेहत खराब होनेपर भी काम-भावना जागृत है और उसके लिए वह तरस रहे हैं। इसके लिए वे डॉक्टरों की सलाह भी लेते हैं। उनकी कामुकता का एहसास डॉक्टर पति-पत्नी और नौकर-नौकरानी के संवादों में भी होता है। मियाँ-बेगम से जुड़े इन सभी के संवादों में यौन-मनोविज्ञान की झलक दिखाई देती है।

धुआँ

इस कहानी में भी यौनाकर्षण के चौखट पर खड़े मसऊद का मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखक ने प्रस्तुत किया है। उसने देखे हुए बकरों की गोस्त से जो सफेद धुआँ उठता था, उसका संबंध कहानी में विभिन्न स्थान पर लगाया गया है। अपनी बहन की कमर तथा टाँगे वह दबाता है और कई खयाल, सोच उसके दिमाग में आते हैं। उसकी मानसिक अवस्था को

लेखक ने कुछ इस तरह बताया है, ''खाना खत्म कर, मसऊज बैठक में चला गया और खिड़की खोल कर फर्श पर लेट गया। बारिश की वजह से सर्दी की शिद्दत बढ़ गयी थी, क्योंकि अब भी चल रही थी। मगर यह सर्दी बुरी नही लगती थी। तालाब के पानी की तरह यह उपर ठण्डी और अंदर गर्म थी। जब मसऊद फर्श पर लेटा तो उसके मन में ख्वाहिश हुई कि वह उस सर्दी के अंदर धँस जाय, जहाँ उसके बदन को राहतकुन गर्मी पहुँचे। देर तक वह ऐसी, गर्म दूध-जैसी बातों के बारे में सोचता रहा, जिसकी वजह से उसके पुट्ठों में हल्का-हल्का दर्द पैदा हो गया। एक दो बार उसने अँगडाई ली तो उसे मजा आया। उसके जिस्म के किसी हिस्से में (यह उसको पता नहीं था कि कहाँ) कोई चीज बहक-सी गयी थी। यह क्या चीज थी, इसके बारे में भी मसऊद को कुछ पता नहीं था। हाँ, इस अटकाव ने उसके सारे जिस्म में बैचेनी, एक दबी हुई बैचेनी पैदा कर दी थी। उसका सारा शरीर खिंच कर लम्बा हो जाने का इरादा बन गया था।''[20] आगे समलैंगिक भावना को भी लेखक ने प्रदर्शित किया है। जो विमला और कुलसुम के बीच स्थापित है और जिसे देखकर मसऊद कुछ समझ न पाता है। उसके दिमाग पर धुआँ-सा छा जाता है। इस प्रकार यौन-मनोविज्ञान का चित्रण लेखक ने किया है।

बू

सारी कहानी यौन-मनोविज्ञान के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। रणधीर एक घाटन लड़की से शरीर संबंध करता है और उसके शरीर के बू के एहसास से तृप्त होता है। कामक्रिडा में उस बू का जो एहसास उसे होता है वह अपनी पढ़ी-लिखि पत्नी में भी उसे नहीं होता। वह पत्नी की हिना की खुशबू में उस बू को तलाशता है लेकिन वह उसे नहीं मिलता। प्रकृति स्वरूप घाटन और उसकी शारीरिक बू को लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है जिसमें सच्ची तृप्ती और आनंद का आभास व्याप्त है। बू को लेकर लेखक लिखता है, ''उस बू को, जो उस घाटन लड़की के अंग-अंग से फूट रही थी, रणधीर बखूबी समझता था, लेकिन समझते हुए भी वह इसका विश्लेषण नहीं कर सकता था। जिस तरह कभी मिट्टी पर पानी छिड़कने से सोंधी सोंधी बू निकलती है - लेकिन नहीं, वह बू कुछ और ही तरह की थी। उसमें लवण्डर और इत्र की मिलावट नहीं थी, वह बिलकुल असली थी - औरत और मर्द के शारीरिक संबंध की तरह असली और पवित्र।''[21] रणधीर उस घाटन के शरीर की बू को उसके एहसास को, उस आनंद को, उस पूर्णता को, उस तृप्ती को जो उसे घाटनद्वारा मिली थी तलाशता रहता है मगर वह उसे नहीं मिलती। यहाँ योन-मनोविज्ञान गहराई से दिखाई देता है।

खाली बोतलें, खाली डिब्बे

जिन कुँवारे मर्दों को शादी में दिलचस्पी नहीं ऐसे मर्दों के खाली बोतलें,

खाली डिब्बे जमा करने की वजह को ढूँढने की कोशिश प्रस्तुत कहानी में लेखक ने किया है। रामस्वरूप जो एक एक्टर है, उसके द्वारा इस रहस्य को सुलझाने का यत्न लेखक करते हैं। इन्हें भी रम की खाली बोतलें तथा सिगरेट के डिब्बे जमाने का शौक है। इसी दौरान एक एक्ट्रैस शीला से उनको इश्क हो गया और स्वभाव में परिवर्तन भी आ गया। उन्होंने एक बिल्ली को छोड़ सब को बेच दिया, खाली बोतलों और डिब्बों को भी बेच दिया और शीला के साथ शादी कर ली। शीला औरत थी - बिल्कुल खाली। शीला खाली बोतल के समान ही थी, शायद इसिलिए खाली बोतलों और डिब्बों की कोई आवश्यकता तब उन्हें नहीं रही थी। इस तरह खालीपन को पूरा करने के लिए ही दूसरी खाली चीजों को लोग संजोया करते हैं यही लेखक ने यहाँ यौन-मनोविज्ञानिकता द्वारा बताया है।

चुगद

प्रकाश के रोमांस के बारे में खयालातों के उपर कहानी फोकस ड़ालती है। उसकी राय में औरत को लुभाने के लिए नर्म-नाजुक शायरी, खुबसूरत शक्ल, सुंदर कपड़े, इत्र... लैवेण्डर और ऐसे किसी खुराफात की जरूरत कम महत्व रखती है और औरत से इश्क करने से पहले, तमाम पहलू सोच कर कोई स्कीम बनायी जाए, ये बात भी उसे मंजूर नहीं। हर काम के लिए जरूरी सोच-विचार संबंध में उसके विचार हैं, ''मानता हूँ, लेकिन यह रोमांस लड़ाना मेरे नजदीक कोई काम नहीं। यह एक... यह एक... भई, तुम गौर क्यों नहीं करते। अफसाना लिखना एक काम है इसे शुरू करने से पहले सोचना जरूरी है। लेकिन रोमांस को आप काम कैसे कह सकते हैं? यह एक... यह एक... मेरा मतलब है, रोमांस मकान बनाना नहीं जो आपको पहले नक्शा बनवाना पड़े। एक लड़की या औरत अचानक आपके सामने आती है। आपके दिल में कुछ गड़बड़ीसी होती है। फिर यह ख्वहिश होती है कि वह आपके साथ लेटी हो।... इसे आप काम कहते हैं? यह एक.. यह एक हैवानी तलब है, जिसे पूरा करने के लिए जानवरों जैसे तरीके ही इस्तेमाल करने चाहिए। जब एक कुत्ता किसी कुतिया से इश्क लड़ाना चाहता है तो वह बैठकर स्कीम तैयार नहीं करता। इसी तरह, जब सांड बू सूंघकर गाय के पास जाता है तो उसे अपने बदन पर इत्र नहीं लगाना पड़ता। बुनियादी तौर पर हम सब जानवर है, इसलिए इश्क या रोमांस में, जो दुनिया की सबसे पुरानी तलब है, इंसानियत का ज्यादा दखल नहीं होना चाहिए।''[22]

प्रकाश अपने उदाहरण द्वारा बताता है कि इश्क में सोचविचार में वक्त गवाने से नतीजा क्या होता है। वह एक लड़की सावित्री से इश्क करता है और सोच-विचार में ही बहुत वक्त गवाता है, इजहार नहीं करता। उसे एक ड्राइवर उड़ाता है। इस घटना के बाद वह

अपने आपको दुनिया का सबसे बड़ा चुगद समझता है। इस तरह इस कहानी में यौन-मनोविज्ञान दिखाई देता है।

मंत्र

इस कहानी में मौलवी की एक सीधे देहाती, अंधविश्वास से ग्रस्त परिवार से धोखाधड़ी तथा उसकी वासनांधता का चित्रण किया गया है। मौलवी चौधरी मौजू के अंधविश्वास तथा भोलेपन का फायदा उठाकर उसकी पत्नी तथा बेटी को अपनी वासना का शिकार बनाता है। मौलवी चौधरी की पत्नी फाताँ तथा बेटी जीनाँ को धोखे से उन्हें फँसाकर शराब पिलाता है और अपनी हवस, काम को पूरा करता है। हवस की आग को बुझाने के लिए मौलवी जैसे लोग किस तरह के तरीके अपनाते हैं, यही यौन-मनोविज्ञान द्वारा लेखक ने बताया है।

नंगी आवाजें

इस कहानी में भोलू की मनोदशा का चित्रण किया गया है। भोलू को टाट के पर्दों के पीछे की नंगी आवाजें परेशान करती हैं। वह शादी करने का फैसला करता है। लेकिन नंगी आवाजों को लेकर उसके दिमाग में कई प्रश्न उठ खड़े होते हैं, ''क्या हम भी ऐसी ही आवाज पैदा करेंगे?... क्या आसपास के लोग हमारी आवाजें भी सुनेंगे?... क्या वे भी इसी की तरह रातें जाग-जागकर काटेंगे? किसी ने अगर झाँककर देख लिया तो क्या होगा?''[23] उसकी स्वतंत्रता में वह परिवेश, वह नंगी आवाजें बाधा बनीं हुई थीं। उसकी दिमागी हालत ऐसी बनी हुई थी। इसी वजह से वह शादी के बाद भी अपनी पत्नी से काम-संबंध नहीं कर पाता है। बाद में पत्नी के नामर्द करार देने पर वह पागल होता है। यहाँ भोलू की मानसिकता में यौन-मनोविज्ञान दिखाई देता है।

ठंडा गोश्त

ईशरसिंह एक मकान पर धावा बोलकर छे आदमीयों को मारता है और एक सुंदर लड़की को उसका मजा चखने के लिए उठाकर लाता है। लड़की उसके कंधेपर ही भयसे मरती है। उसे थूहड़ की झाड़ियों तले लिटा दिया और उससे अपनी वासना बुझानी चाही तो उसे एक शॉक सा लगता है। वह लड़की मरी हुई थी, उसके सामने ठंडा गोश्त पड़ा हुआ था। और उस शौक से उसकी सारी वासनांध मर्दानगी ठंड़ी पड़ गई, वह वासना से नामर्द बन गया। वहाँसे आकर कुलवंत कौर से भी कामसंबंध करने में नाकामयाब रहा। इसका वर्णन देखिए -

''ईशरसिंह ने और जुल्म ढ़ाने शुरू किये। कुलवंत कौर का ऊपरी होंठ दातों तले कियकिचाया, कान की लवों को काटा, उभरे हुए सीने को झंझोड़ा, भरे हुए कुल्हों पर आवाज पैदा करने वाले चाँटे मारे, गालों के मुँह भर-भरकर बोसे लिए, चूस-चूसकर उसका

सीना थूकों से लथेड़ दिया। कुलवंत कौर तेज आँच पर चढ़ी हुई हाँडी की तरह उबलने लगी। लेकिन ईशरसिंह उन तमाम हीलों के बावजूद खुद में हरकत पैदा न कर सका। जितने गुर और जितने दाँव उसे याद थे, सबके-सब उसने पिट जाने वाले पहलवान की तरह इस्तेमाल कर दिए, परंतु कोई कारगर न हुआ। कुलवंत कौर के सारे बदन के तार तनकर खुद-ब-खुद बज रहे थे, गैरजरूरी छेड़-छाड़ से तंग आकर कहा, 'ईशरसियाँ काफी फेंट चुका है, अब पत्ता फेंक!'

यह सुनते ही ईशरसिंह के हाथ से जैसे ताश की सारी गड्डी नीचे फिसल गई। हाँफता हुआ वह कुलवंत कौर के पहलू में लेट गया और उसके माथे पर सर्द पसीने के लेप होने लगे।

कुलवंत कौर ने उसे गरमाने की बहुत कोशिश की, मगर नाकाम रही। अब तक सब कुछ मुँह से कहे बगैर होता रहा था, लेकिन जब कुलवंत कौर के क्रियापेक्षी अंगों को सख्त निराशा हुई तो वह झल्लाकर पलंग से उतर गई।''[24]

इस तरह उपयु 'क्त स्थिति तथा वाक्यों में यौन मनोविज्ञान दिखाई देता है।

2) बँटवारे के समय के माहौल का यथार्थ चित्रण -

बँटवारे की घटना ने मंटो के दिमाग पर बहुत आघात किया था और इसी कारण उनकी लेखनी से उसके संबंध में कई कहानियाँ निकली। एक-एक जबरदस्त अफसाने उन्होंने पेश किए। उस माहौल का यथार्थ चित्रण उन्होंने किया। उस समय की स्थिति, हालात, समस्याएँ, मानसिकताएँ, उसका प्रभाव, पूरा परिवेश आदी सभी बातों का दर्शन उन्होंने अपनी कहानियों में किया है। बँटवारे पर उन्होंने सिर्फ कहानियाँ नहीं लिखी हैं, बँटवारे को लेकर रूह की गहराइयों में दाखिल हुए हैं। पूरी गहराई से उस समय के माहौल का चित्रण उन्होंने प्रस्तुत किया है। वह कहानियाँ इसप्रकार है -

टोबा टेकसिंह

यह कहानी बिशन सिंह इस पागल पात्र पर केंद्रित है। उसका गाँव टोबा टेकसिंह है और वह आने-जानेवालों से पूछता रहता है कि वह हिंदुस्तान में है या पाकिस्तान में। उसे सभी टोबा टेकसिंह कहते हैं। बँटवारे के दो-तीन साल बाद पाकिस्तान और हिंदुस्तान की सरकारों को ख्याल आया कि साधारण कैदियों की तरह पागलों का भी तबादला होना चाहिए। यानी जो मुसलमान पागल हिंदुस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें पाकिस्तान पहुँचा दिया जाए और जो हिंदू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें हिंदुस्तान के हवाले कर दिया जाए।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान को लेकर पागलों की अपनी राय, तथा उनकी बातचीत कहानी में दिखाई गई है। बँटवारे का असर किस तरह पूरे वातावरण में छाया हुआ था, इसका जायजा यहाँ होता है। बाघा बार्डर पर तबादला शुरू हो गया। जब बिशनसिंह की बारी आई और उसके पूछने पर अधिकारी द्वारा बताया गया कि, ''पाकिस्तान में!'' तो उसने चलने से इंकार कर दिया। उसे समझाया गया कि टोबा टेकसिंह अब हिंदुस्तान में चला गया है - यदि नहीं गया है तो उसे तुरंत भेज दिया जाएगा, किंतु वह न माना। वह वहीं खड़ा बीच में एक स्थान पर खड़ा रहा। आदमी बेजरर होने से, जबरदस्ती न कर उसे वहीं खड़ा रहने दिया गया और शेष काम होता रहा। आखिरकार जमीन का वह टुकड़ा जिसका कोई नाम नहीं यानी नो मैंस लैण्ड जहाँ टोबा टेकसिंह चीखता है और पछाड़ खा कर गिरता है। इस तरह एक पागल के माध्यम से बँटवारे का आघात, बँटवारे के बाद का माहौल और उसके परिणाम आदि का चित्रण लेखक ने किया है।

सहाय

हिंदू-मुसलमान के बीच दंगे शुरू थे। हिंदू मुल्क में मुसलमान और मुसलमानों के मुल्क में हिंदू कत्ल किए जा रहे थे। किसी अपने को गैर मजहब के आदमी द्वारा कत्ल किए जाने का बहुत गहरा असर छाके उस वक्त वह साथी गैर मजहबी मित्र को भी मार ड़ालने की मनस्थिति छाई हुई थी। दंगों की ताजा हालत में उसका गहरा असर होना जायज था और उस वक्त कोई मित्र सामने नहीं दिखता, दिखता है तो सिर्फ गैर मजहबी जो अपने मजहब का दुश्मन है, वह आदमी। उस समय उठे फसादों की भी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि यहीं थी जिसमें रोजाना सैकड़ों बेगुनाह हिंदू और मुसलमान मौत के घाट उतारे जा रहे थे। यहीं पृष्ठभूमि हैं, जब जुगल को लाहौर से खत मिला कि दंगों में उसका चाचा मारा गया है तो इस सदमे के असर से उसने जिगरी मित्र मुमताज से कहा कि हमारे मुहल्ले में दंगा शुरू हो जाए तो मैं सोच रहा हूँ, बहुत मुमकिन है मैं तुम्हें मार डालूँ। यही कारण है कि मुमताज जहाज से कराची जा रहा था। उसे छोड़ने गए तीन हिंदू और उसमें बातचीत होती रहती है।

मुमताज के शब्दों में गहरी मानवीयता छुपी हुई है, वह कहता है, ''हो सकता है मेरे मजहब वाले मुझे शहीद कहते। लेकिन खुदी की कसम अगर मुमकिन होता तो मैं कब्र फोड़कर चिल्लाना शुरू कर देता - मुझे शहादत का यह रूतबा कबूल नहीं - मुझे यह डिग्री नहीं चाहिए, जिसका इम्तहान मैंने दिया ही नहीं। लाहौर में तुम्हारे चाचा को एक मुसलमान ने मार डाला। तुमने यह बात बम्बई में सुनी और मुझे कत्ल कर दिया - बताओ तुम और मैं किस तगमे के काबिल हैं? - और लाहौर में तुम्हारा चाचा और उसका कातिल किस इनाम के

हकदार हैं - मैं तो यह कहूँगा कि मरने वाले कुत्ते की मौत मारे गए और मारने वालों ने बेकार -बिल्कुल बेकार अपने हाथ खून से रँगे।''[25]

मुमताज एक भडवैये, औरतों के दलाल सहाय की घटना को सुनाता है। सहाय का जमीर बहुत साफ था। उन तमाम लडकियों को जो उसके धंधे में शामिल थीं अपनी बेटियाँ समझता था। हर लड़की के नाम पर पोस्ट ऑफिस में सेविंग खाता खोल रखा था और हर महीने कुल आमदनी वह वहाँ जमा कर आता था।

दंगों में सहाय जखमी होता है। मुमताज से उसकी मुटभेड हुई तो उसके मन में ड़र पैदा हुए क्योंकि सहाय हिंदू था, मुमताज मुसलमान और उसे मारनेवाला मुसलमान। हमदर्दी होने के बावजूद पकड़े जाने या फँसा दिए जाने के ड़र से वह वहाँ से जाने लगा लेकिन सहाय के पुकारने पर फिर रूक गया। सहाय ने उस हालत में सुल्ताना के कुछ जेवर और बारह सौ रुपये जो उसने एक दोस्त के पास रखे थे, खतरा बढने के कारण उसे देने के लिए देता है। मुमताज बाद में वह सुल्ताना तक पहुँचाता है। गहरी मानवता का दर्शन यहाँ होता है। दंगों की स्थितियों की आँखों देखी, अनुभव की स्थिति यहाँ लेखक ने बताई है -

खोल दो

प्रस्तुत कहानी में बँटवारे के माहौल में बनी अमानुष और दर्दनाक स्थिति को बयाण किया गया है। कहानी की घटना बहुत गहरा प्रभाव ड़ालती है। बूढ़ा सराजुद्दीन अपनी जवान बेटी सकीना को ढूँढ़ रहा है, जो दंगों में कहीं खो गई है। उसकी तलाश में वह मारा-मारा पागलों की तरह फिर रहा है। नौजवान रजाकारों को भी वह उसे ढूँढने को कहता है और उनसे बड़ी उम्मीद रखता है। आखिरकार सकीना उसे अस्पताल में मिलती है लगभग मुर्दावस्था में। जब डॉक्टर सराजुद्दीन को खिड़की खोलने कहता है तब सकीना उस मुर्दावस्था में भी इजारबंद खोलकर सलवार नीचे सरकाती है। उसकी हालत को देखकर डॉक्टर पसीने से गर्क होता है और सराजुद्दीन खुश हो उठता है इसलिए की उसकी बेटी जिंदा है। अपने ही हम-मजहब रजाकारोंद्वारा बार-बार बलात्कार किए जाने के कारण सकीना की जो हालत थी वह बहुत ही दर्दनाक है। बँटवारे के समय घटी ऐसी दर्दनाक और अमानुष घटनाओं को लेखक ने सामने लाया है।

खुदा की कसम

बँटवारे के समय हुए दंगों में अमानुषता और अत्याचार छाए हुए थे। औरतों को भगाया जा रहा था। हालातों में पाशविकता छाई हुई थी। अफसरों द्वारा भगाई हुई औरतों की तलाश भी जारी थी। लेखक ने उस समय के पत्रकार कहानी-लेखक और कवियों

के हाल बताए है, ''और पत्रकार, कहानी-लेखक, और कवि अपनी कलम उठाए शिकार में व्यस्त थे; लेकिन कहानियों और कविताओं का एक सैलाब था जो उमड़ा चला आ रहा था। कलमों के कदम उखड़-उखड़ जाते थे। जितने ही भिकारी थे, सब बौखला गए थे।''[26]

ऐसी स्थिति में ममता की प्यासी एक मुसलमान बूढ़ी औरत अपनी सुंदर बेटी को ढूँढ़ रही थी, जिसे दंगों के दरम्यान भगाया गया था और इस सदमें से वह पागल हो गई थी। वह गली-गली, हर जगह अपनी जान की भी परवाह न करते हुए मारी-मारी उसे ढूँढ़ रही थी। उसे कईयोंके बताने पर की उसकी बेटी मर चुकी है, उसे विश्वास नहीं होता था। उसकी ममता यह मानने को ही तैयार नहीं थी कि उसकी बेटी मर चुकी है। बेटी उसे दिखती भी है, बुढिया उसे पहचान भी लेती है लेकिन वह सिख नौजवान के साथ बुढ़िया को देखकर भी चली जाती है। आखिरकार लेखक उसे खुदा की कसम देकर कहता है कि उसकी बेटी मर चुकी है और यह सुनते ही वह ढेर होती है। ऐसी दर्दनाक हालातों का वर्णन लेखक ने अपनी कहानियों में किया है।

मोजेल

मोजेल इस स्त्री-पात्र के व्यक्तित्व को लेखक ने कहानी में उतारा है। वह अपने तौर-तरीकों की हिमायती है। त्रिलोचन मोजेल को चाहता है लेकिन मोजेल उसे बाल (दाढ़ी, मुछे) काटने को कहती है और उन दोनों में धर्म की दीवार खड़ी हो जाती है। त्रिलोचन कृपाल कौर से प्यार करता है। दंगों की स्थिति में मोजेल अपने जान की भी परवाह न करते हुए उसे और कृपाल को मुसलमान मुहल्ले से बाहर निकालकर उनकी जान बचाती है। दंगों की स्थितियों में किस कदर लोग एक दूसरे मजहबों के लोगों के खून के प्यासे थे और उस दौरान कैसी स्थिति छाई हुई थी इसका सही और यथार्थ वर्णन लेखक ने प्रस्तुत कहानी में किया है।

गुरमुखसिंह की वसीयत

हिंदुओं के मुहल्लों में जो मुसलमान रहते थे, भागने लगे। इसी तरह से हिंदू, जो मुसलमानों के मुहल्लों में थे, अपना घर-बार छोडकर, सुरक्षित स्थानों का रूख करने लगे पर यह इंतजाम सबके खयाल में अस्थायी था - उस समय तक के लिए, जब तक माहौल, दंगों के जहर से पाक साफ न हो जाए।

मियाँ अब्दुल हई, रिटायर्ड सब-जज को विश्वास था कि हालात बहुत जल्दी ठीक हो जाएँगे। लेकिन हालात बिघडते जाते है। स्थिति का वर्णन लेखक ने इस तरह से किया है : ''रात को अब कुछ और ही नजारा होता। घुप्प अँधेरे में, आग के बड़े-बड़े शोले उठते, मानों देव हैं, जो अपने मुँह से आग के फव्वारे छोड़ रहे हैं। फिर अजीब-अजीब सी आवाजें आती, जो 'हर-हर महादेव' और 'अल्लाह-हो-अकबर' के नारों के साथ मिलकर, बहुत ही भयानक बन जाती।''[27]

सुगरा और बशारत जो मियाँ साहब की दो संताने थी, उनकी हालत भी घबराहटजनक थी। ऐसी हालातों में ही मियाँ साहब पर फालिज गिरा, जिसकी वजह से उन्होंने चारपाई पकड़ ली। हालात बहुत ही बिकट हो गए। सुगरा के मन की स्थिति बहुतही विवश और दर्दनाक बनी हुई है। दशा को लेखक ने व्यक्त किया है : ''शाम का वक्त था। सुगरा और बशारत ऐसी कई शामें देख चुके थे, जब ईद के हंगामे होते थे; जब आसमान पर चाँद देखने के लिए उनकी नजरें जमी रहती थीं। दूसरे दिन ईद थी, सिर्फ चाँद को उसका ऐलान करना था। दोनों इस ऐलान के लिए कितने बेताब हुआ करते थे; आसमान में चाँद वाली जगह पर अगर बादल का कोई हठीला टुकड़ा जम जाता तो कितनी कोफ्त होती थी उन्हें, पर अब चारों तरफ धुएँ के बादल थे। सुगरा और बशारत, दोनों माटी पर चढ़े। दूर कहीं-कहीं कोठों पर, लोगों के साये, धब्बों की सूरत में दिखाई देते थे, पर पता नहीं, वे चाँद देख रहे थे या जगह जगह सुलगती और भड़कती हुई आग!''[28]

ईद के दिन गुरमुखसिंह का बेटा ऐसी स्थिति में सेवैयों का थैला लेकर आता है। सुगरा को इससे कितनी तसल्ली हो जाती है। लेकिन वह बाप का वचन पूरा कर ऐसे बेबस परिवार को दंगलफरादों के हवाले कर चला जाता है। ऐसी अमानवीयता की स्थिति को लेखक ने दर्शाया है।

रामखेलावन

रामखेलावन मुंबई का धोबी है । लेखक काम के सिलसिले में मुंबई जाता था और रामखेलनावन उनके कपड़े धोके देता था। दंगों की स्थिति में जब लेखक हिंदूओं की गली में फँस जाता है और सेठ लोगों के बहकावे में आकर, बहककर रामखेलावन लेखक पर हाथ उठाने जाता है लेकिन वह जल्द ही सँभल जाता है, होश में आता है। लेखक की पत्नी ने उसे जब जुलाब हुआ था तो उसे डाक्टर के पास ले जाकर दवा-दारू का खर्चा देखा था, उसी के कारण वह बचा था। इसका एहसास जब उसे होता है तो उसे अपने किए पर पश्चाताप होता है। यहाँ रामखेलावन के माध्यम से मानवीयता का दर्शन लेखक ने किया है।

नंगी आवाजें

यह बँटवारे में बनें शरणार्थियों की कहानी है। जगह की कमी इस कहानी की समस्या है। छतपर टाट के परदों के आड़ पत्नी के साथ संबंध बनाने में भोलू संकोचता है, संबंध नहीं कर पाता है। नंगी आवाजें उसे झकझोरती रहती हैं। इसके कारण जब पत्नी उसे नामर्द करार देती है तब वह पागल हो जाता है। बँटवारे के कारण, उसके प्रभाव में बनी मानसिकता का चित्रण लेखक ने किया है। अंत में भोलू की स्थिति किस तरह होती है, लेखक

ने बताया है : ''भोलू के दिल में छुरी-सी उतर गयी। उसका दिमागी संतुलन बिगड़ गया। वह उठा और कोठे पर चढ़कर, जितने टाट लगे थे, उन्हें उसने उखेड़ना शुरूकर दिया। 'खट-खट फुट-फट' सुनकर लोग जग गए। उन्होंने उसको रोकने की कोशिश की तो वह लड़ने लगा। बात बढ़ गयी। कल्लन ने गॅस उठाकर उसके सिर पर दे मारा। भोलू चकराकर गिरा और बेहोश हो गया। जब उसे होश आया, तो उसका दिमाग चल चुका था। अब वह बिलकुल नंग-धडंग बाजारों में घूमता-फिरता है। कहीं टाट लटका देखता है तो उसको उतारकर टुकड़े-टुकड़े कर देता है।''[29]

यजीद

यह कहानी मंटो ने पाकिस्तान जाने के बाद लिखी और यह उनकी चुनिंदा कहानियों में से एक है, क्योंकि इस कहानी के माध्यम से मंटो ने एक बहुत ही नाजुक बात को व्यक्त किया है। मंटो की यह मान्यता थी कि बँटवारे के कारण दोनों तरफ की जनता, ऊपरी तौर से दो हिस्सों में बँटकर भी, मूल रुप से एक ही थी; इस कहानी में पूरी तरह अभिव्यक्त हुई है। हिंदुस्थान द्वारा दरिया बंद कर देने की भयावह अफवा के कारण बनी लोगों की मानसिकता को प्रकट किया है। कहानी में मुस्लिम धार्मिक प्रतीकों को बड़ी कुशलता से गूँथा गया है और करीमदाद का आखिरी वाक्य : 'जरुरी नहीं कि यह भी वही यजीद हो। उसने पानी बंद किया था, यह खोलेगा' - मन को बेहतर छू जाता है, क्योंकि बँटवारे की तल्ख हकीकत को अन्ततः तसलीम करने के बाद भी, मंटो की यह दिली ख्वाहिश थी कि मुल्क एक हो जाए और लोग फिर उसी तरह सह-अस्तित्व की स्थिति में आ जाएँ। इस कहानी के द्वारा मंटो ने, उस समय के, अपनी ही नहीं, हजारों-लाखों लोगों की दिली-ख्वाहिश को अभिव्यक्त किया है।

टिटवाल का कुत्ता

मोर्चे संभाले हिंदुस्तानी और पाकिस्तानी एक कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनते हैं। इधर के लोगों को शक है कि कहीं यह पाकिस्तानी तो नहीं और उधर के लोगों को शक है कि कुत्ता हिंदुस्तानी तो नहीं। इसी चक्कर में कुत्ता दोनों ओर की गोलियों का शिकार बन कर दम तोड़ देता है। एक जवान अपने बूट की एड़ी से जमीन खोदते हुए कहता है, 'अब कुत्तों को भी या तो हिंदुस्तानी होना पड़ेगा या पाकिस्तानी', टिटवाल के कुत्ते की तरह क्या आम हिंदुस्तानी और आम पाकिस्तानी को कल की तरह आज भी राजनीतिक बहशीपन का शिकार बने रहना पड़ेगा? मंटो ने कौम और जाति से जुड़े तिलमिला देने वाले ऐसे बड़े प्रश्न अपनी कहानियों में खड़े किए हैं जो आज नए रुपों में नए विमर्श को उकसाते हैं। लेखक ने बँटवारे के कारण निर्मित यथार्थ स्थिति को प्रतीक में ढ़ालकर सामने उपस्थित किया है।

शरीफन

यह कहानी नहीं, एक जीता-जागता दु:स्वप्न मालूम होती है। एक आदमी जब निजी हादसे का शिकार होता है तो किस तरह समझ-सोच को भुलाकर, दरिंदगी पर उतर आता है, यह बात मंटो ने अपनी सीधी-साफ शैली में बयान कर दी है और इसीलिए कहानी के अंत में, कासिम के प्रति गुस्सा नहीं आता, वरन परिस्थितियों के असह्य दबाव के नीचे उसकी अपार दयनीयता और विवशता के प्रति दुख और दया ही उपजती है। स्थिति के कारण शरीफन के कत्ल के असर से वह निरपराध बिमला का कत्ल कर देता है। कई बेगुनाह इस कृत्य के लिए अनजाने ही बली पड़ जाते है और कई कत्ल किए जाते है। यह कहानी पाठकों को दहशत की ऐसी सर्द हालत में छोड़ जाती है कि वे संजीदा होकर इस सारी स्थिति पर गौर करने के लिए प्रेरित होते हैं, जो आदमी को पशु के स्तर पर ला कर उसे ईंसान से कई दर्जा नीचे रहने के लिए मजबूर करती है।

सियाह हाशिये

इसमें अनेक लघु-लघु कथाएँ है। इससे एहसास होता है कि बँटवारा मंटो और हजारों लाखों लोगों की जिंदगी में, कैसे हादसे के रुप में टूटा था और इस सारी जनता पर उसका क्या असर हुआ। ये एक बड़ी त्रासदी के टुकड़े हैं। छोटी-छोटी कथाओं में क्रूरता और करुणा, कोमलता और वज्रता के विरोधी भावों में तनी ये कथाएँ सीधे-सीधे हमारे आज के परिवेश से आ जुड़ती हैं।

ठंडा गोश्त

लूटमार के दौरान कईयों के कत्ल करने के बाद ईशरसिंह एक नौजवान युवती को उठा लाता है कि वह उससे सहवास सुख प्राप्त करें, मगर जब वह ऐसा करना चाहता है तो उसे मालूम होता है कि लड़की दहशत के मारे उसके कंधों पर ही मर चुकी है और ईशरसिंह के सहवास सुख प्राप्त करने की नीयत से लड़की की ठंड़ी लाश पर झुकने से उसकी मर्दानगी गायब हो जाती है। यहाँ दंगों की भयावहता तथा उससे जुड़े घटनाओं के असर को लेखक ने मनोवैज्ञानिकता द्वारा बताया है।

प्रस्तुत कहानियों के माध्यम से लेखक ने बँटवारे के समय के माहौल का यथार्थ चित्रण किया है।

3) नारी पात्रों का सशक्त चित्रण -

नारी समाज का एक अविभाज्य और महत्वपूर्ण घटक है। लेखक ने नारी पात्रों को अपनी कहानियों में कुछ अलग ढ़ंग से, सशक्त रुप को लिए गढ़ा है। नारी का

सर्वांगिण सूक्ष्म निरीक्षण कर तथा अनुभव से उसे अपनी कहानियों में उतारा है। नारी के विभिन्न पहलूओं को उजागर कर उसका चित्र समाजसम्मुख उपस्थित किया है।

सड़क के किनारे

प्रस्तुत कहानी में मनोवैज्ञानिकता से नारी की दशा को अभिव्यक्त किया गया है। वह किस तरह स्थिति और घटनाओं की बली चढ़ती जाती है, इसका उदाहरण यहाँ पेश किया गया है। पुरुष से वह प्रेम करती है, वह उसका इस्तेमाल कर छोड़ देता है। वह उसके गर्भ को जन्म देकर पालना चाहती है लेकिन समाज यह होने नहीं देता। जन्म होनेपर उस नवजात शिशु को सड़क के किनारे मरने के लिए छोड़ दिया जाता है। नारी की ममता छलनी-छलनी हो जाती है। लेकिन उस शिशु को उससे छिन लिया जाता है। प्यार में दगाबाजी फिर ममता पर आघात इस विवशता में घिरी नारी का मनोविश्लेषण लेखक ने मार्मिकता से किया है।

हतक

वेश्या-जीवन को लेखक ने बहुतही नजदीकी से अनुभव किया है। इसलिए उनकी कहानियों में आए वेश्या-नारी पात्रों का सशक्त चित्र खिंचने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी है। सुगंधी उनकी अजरामर वेश्या पात्र है। सुगंधी के माध्यम से वेश्याओं का जीवन, स्थितियाँ तथा उनकी मानसिकता को लेखक ने सामने रखा है। वह वेश्या है लेकिन वह नारी भी है, यह भावना लेखक के मस्तिष्क के पीछे काम करती दिखती है। सेठ के उसे ठुकराने पर 'मुझमें क्या बुराई है?' इस क्रोधित मानसिकता में वह काफी देरतक घिर जाती है। उसे इस्तेमाल करते हुए माधो को बाहर निकालती है और शून्यावस्था में जा पहुँचती है। अत: सुगंधी का सर्वोपांग चित्रण लेखक ने किया है।

काली सलवार

इस कहानी में भी सुल्ताना इस वेश्यापात्र पर लेखक ने फोकस ड़ाला है। खुदाबख्श पर के अंधविश्वास से, उसके कहनेपर कंबाला छोड़ वह दिल्ली आती है। उसकी आर्थिक हालत कुछ ठीक नहीं है। उसकी मनोदशा को लेखक ने मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से पेश किया है। फिर उसकी मुलाकात शंकर से होती है। उसके पास धन न होते हुए भी वह उसके आधिन हो जाती है। मुहर्रम के लिए उसे काली सलवार सिलाने की इच्छा है। एक वेश्या होनेपर भी वह यह चाह रखती है और बुंदों के बदले में उसे वह मिलने पर वह खुश होती है। सुल्ताना इस वेश्या में छुपी नारी को लेखक ने सामने लाया है।

सौ कैण्डल पावर का बल्ब

प्रस्तुत कहानी में पुरुष द्वारा नारी पर सहनशीलता के मर्यादा को लांघकर

किए जानेवाले अत्याचार को दिखाया गया है। इस कहानी में नारीमुखद्वारा ज्यादा शब्द नहीं निकले हैं लेकिन जितना वह बोली है वह शब्द उसकी त्रासदी को उजागर करते है। वह इतने परेशान हालत में है, उसे इतनी नींद आई हुई है कि वह सौ कैण्डल पावर के बल्ब की तेज रोशनी में भी सोई हुई है। इतना होनेपर भी दलाल उसे और काम करवाना चाहता है। किसी की हमदर्दी भी उसे सही नहीं जाती। सहनशीलता के मर्यादा के उल्लंघन के बाद वह उस दलाल का कत्ल भी करनेपर मजबूर होती है। नारी की भयावह त्रासदी को यहाँ लेखक ने 'औरत' इस पात्रद्वारा उजागर किया है।

हारता चला गया

'वह' पैसे हारने के लिए जब जुआघर जाता तब टैक्सी रुकने के बाद बिजली के खम्बे के पास एक अधेड उम्र की औरत टूटा हुआ शीशा सामने रखे, लकड़ी के तख्त पर बैठी, सिंगार में मशरूफ रहती थी। उस बदसूरत औरत को हमदर्दी से हररोज दस रुपये देकर उसका धंदा बंद करने का वचन वह उसे देता है। लेकिन कुछ दिन बाद 'वह' उसकी वही स्थिति देखता है। 'वह' उससे नाराज होता है लेकिन औरत उससे पूछती है - ''क्या तुम ये सब बत्तियाँ बुझा सकते हो?'' इस प्रश्न पर वह निरुत्तर हो जाता है। दस रुपये देकर वह एक की बत्ती बुझा सकता था लेकिन ऐसी कई बत्तियाँ वहाँ जल रही थीं, उन सबको बुझाने में वह असमर्ध होता है। गंगूबाई द्वारा उस पेशे की कड़वाहट को लेखक ने व्यक्त करना चाहा है।

मैडम डीकॉस्टा

इस नारी के विविध पहलूओं को लेखक ने कहानी में बताया है। बच्चा पैदा होने के समय की ज्यादातर जानकारी उसे है। और कोई इस हालत में हो तो वह उसका बहुत खयाल करती है। वह उसकी पूरी जानकारी रखती है और चिंता व्यक्त करती है। 'मैं' इस नारी पात्र को वह घर में बुलाकर बच्चा पैदा होने का अंदाजा बयान करती है। इस स्थिति को लेखक ने कुछ इस तरह शब्दों में सामने रखा है -

''मेरे पेट पर ठंडे-ठंडे तेल की एक लकीर दौड़ गयी। मैडम डीकॉस्टा खुश हो गयी। मैंने जब कपड़े पहन लिये तो उसने संतोष भरे लहजे में कहा- 'आज क्या डेट है? ग्यारह... बस पन्द्रह को बच्चा हो जाएगा और लड़का ही होगा।'

बच्चा 25 तारीख को हुआ, लेकिन था लड़का। अब, जब कभी वह मेरे पेट पर अपने नन्हे-नन्हे हाथ रखता है, तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैडम डीकॉस्टा ने खोपरे के तेल की सारी बोतल उँडेल दी है।''[30]

मैडम डीकॉस्टा इस नारी पात्र के माध्यम से लेखक ने मानवीयता का दर्शन कराया है।

महमूदा

हालातों के कारण न चाहते हुए भी गंधे रास्तोंपर चलने के लिए नारी मजबूर होती है और यही महमूदा इस पात्रद्वारा लेखक ने बताया है। महमूदा बड़ी आँखोवाली सुंदर नारी है। उसका पति नामर्द निकलता है और वह अहिस्ता-अहिस्ता स्थितियों के जंजाल में फँसकर बरबादी के रास्ते में बहती चली जाती है। इसमें उसका कोई कसूर नहीं लेकिन स्थितियों के कारण वह वेश्या धंदा करने पर विवश हो जाती है। आखिरकार वह पान की दुकान पर एक वेश्या के लहजे में देखी जाती है। इस दर्दनाक नारी-अवस्था को लेखक ने सामने रखा है।

शिकारी औरतें

इसमें लेखक ने अनुभव किए किस्से हैं। कुछ औरतें किस तरह शिकार ढूँढ़ती हैं इसका चित्रण यहाँ किया गया है। मजबूरी, अकेलापन, वासनांधता, सहारा ऐसे कई कारणों से कई औरतें शिकार ढूँढती रहती हैं और उन्हें फाँसने की कोशिश में लगी रहती हैं। लेखक ने इस कहानी में तीन वारदाते बताई हैं जो उसकी मौजूदगी में घटी हुई हैं। लेकिन विवशता हो या कोई और कारण हो कुछ औरतें किसी को फाँसने पर तुली होती हैं - अपने जंजाल मे फँसाने के लिए वह हदसे आगे जाती हैं, बहशीपन और आवारागर्दी के सीमातक भी पहूँचती हैं, ऐसा कुछ वह करती हैं जिसका यकीन ही नहीं होता और बाद में आचरज होता है, ऐसी औरतों की मनोदशाओं को लेखक ने किस्सोंद्वारा कहानी में कहा है।

मेरा नाम राधा है

बनावटी मुखवटा हटा कर, अंदर उमड़ती यौन भावनाएँ किस तरह अपनी विकृतावस्था धारण कर लेती हैं इसका उदाहरण नीलम इस नारी पात्र में दिखाई देता है। संबंधों की सच्चाई, दिखावटगिरी और नंगई को कहानी उजागर करती है। एक्ट्रेस नीलम जिसका असली नाम राधा है, उसके विकृतावस्था का मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखक ने किया है। नीलम के स्वभावगत विशेषताओं को लेखक ने बयान किया है। राजकिशोर से हुआ उसका अपमान वह सहन न कर पाती है और उसपे बरसती है। उसकी इस विकृतावस्था का चित्रण लेखक ने मनोवैज्ञानिकता से विस्तार में किया है। नीलम की मनोदशाओं को लेखक ने उजागर किया है।

मम्मी

मम्मी इस नारी पात्र में लेखक ने मानवता का दर्शन कराया है। मम्मी उस गली में बसे सब लोगों का खयाल रखती है। भलेही उसके घर में पार्टियाँ चलती हैं जिसमें शराब और लडकियाँ भी मौजूद रहती हैं। लेकिन गलत रास्तेपर जानेसे वह रोकती है। वह हर किसी

के मदद के लिए भागी चली आती है। पुलिस उससे दलाली करवाना चाहती है, इंकार करनेपर पुलिस और सरकार मिलकर उसे पूना से हद्दपार कर देते हैं। व्यवस्था की इस गंधी नीति का लेखक ने पर्दाफाश किया है। अत: तरीके, रहन-सहन कैसा भी हो सच्चे मानवीयता के दर्शन यहाँ होते हैं।

जानकी

जानकी निश्चयही सेवाव्रती, दिल की साफ, प्रेम की पूजारन और आदर्श नारी पात्र है। लेकिन व्यवस्था के सिकंजे में जकड़कर बार-बार अलग-अगल मर्दों से शरीरसंबंध रखनेपर मजबूर हो जाती है। औरत का अकेलापन, बेसहारापन उसे खाए जाता है। जिंदगी बसर करने के लिए वह किसी सहारे को तलाशती रहती है। और यही बात जानकी में भी देखी जाती है। पहले वह अजीज की प्रेमिका है, उसकी बहुतही निष्ठाभाव से सेवा वह करती है। आखिर में उसके ठुकराने के बाद उसको जखमी हालत से अच्छा करनेवाले नारायण के साथ शरीरसंबंध रखती है। लेकिन हर किसी के सहवास में उसका रुप आदर्श ही बना रहता है। सेवाव्रती, सच्चे दिलकी, प्रेम की पूजारन। ऐसा होनेपर भी हालात उसे भटकने पर मजबूर कर देते हैं। पूरी कहानी में जानकी इस पात्र का चित्रण अपने आदर्श रुप को लिए हुए है।

सुरमा

लेखक ने प्रस्तुत कहानी मे फहमीदा इस नारी पात्र की मनोदशा को मनोवैज्ञानिकता से दर्शाया है। फहमीदा को बचपन से ही सुरमा बहुत पसंद है। इसके फायदे से भी वह बहुत अच्छी तरह वाकिफ है। शादी में भी माँ से वह इसकी माँग करती है। लेकिन पति के बातों की असर से वह सुरमा लगाना छोड़ देती है। बाद में जब उसके प्यारे बच्चे के निधन का गहरा सदमा उसे पहुँचता है तो अपनी चाहसे वह सुरमा लाती है और उसे लगाकर मर जाती है। फहमीदा के मन-मस्तिष्क पर सुरमा छाया रहता है और अपने दिल की मुराद पूरा कर वह मरती है। फहमीदा की इस मनोदशा को लेखक ने मनोवैज्ञानिकता से चित्रित किया है।

इस तरह प्रस्तुत कहानियों में लेखक ने नारी पात्रों का सशक्त चित्रण किया है।

4) **व्यवस्था पर करारा व्यंग्य -**

व्यवस्था वह होती है या इसके लिए बनाई जाती है जिससे इंसान को सुगुण मिले, इंसान की समस्याएँ दूर हो, समाजव्यवस्था में वह सुखी जीवन बीता सके लेकिन यही व्यवस्था जब इंसानियत के बीच रुकावट बन खड़ी होती है तो इससे समाज दूषित होने लगता है। व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा उसपर आघात होनेसे वह गलत राह पर भटकने लगता है। अत: इंसानियत ही खत्म हो जाती है। लेखक ने उस गलत व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य किया है।

जिससे समाज घटक त्रासदी का शिकार हो जाता है, निम्नलिखित कहानियों में यह बात दिखाई गई है -

नारा

इस कहानी में केशवलाल उस व्यवस्था का शिकार है, जो आदमी को आदमी से एक स्तर नीचे जीने के लिए विवश करती है; ऐसी व्यवस्था, जहाँ मानवीयता की कोई गुंजाइश नहीं है। मजबूर केशवलाल को किराया न दे सकने पर उसके मकान-मालिक सेठ द्वारा गालियाँ दी जाती है। यह गालियाँ उसके अंदर तूफान की तरह खौलने लगती हैं। वह चाहे तो उसे पटक सकता है लेकिन मजबूरी ने उसके हाथ बाँध दिए है। वह विवश है, वह कुछ नहीं कर सकता है। जब अंदर का तूफान खौलकर बाहर आने का रास्ता ढूँढता है तो एक जबरदस्त नारे के रुप में बाहर निकलता है। कई ऐसे मजबूर, लाचार आम आदमी है जिनपर व्यवस्था जुल्म ढ़ाती रहती है। इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी मे लेखक ने किया है।

हतक

बिलकुल केशवलाल की तरह इस कहानी की सुगंधी भी व्यवस्था की शिकार बनी हुई है। सेठद्वारा वह ठुकराई जाती है। इससे उसके अंतरमन में तहलता मच जाता है। क्रोध और त्रासदी उसे घेर लेती हैं। बहुत देर तक वह इस विचार में खोई रहती है। माधो जो सुगंधी का इस्तमाल करता रहता है, जो शोषणकर्ता का प्रतीक है उसे वह घर से निकल देती है। व्यवस्था के शिकंजे में फँसी सुगंधी जैसी वेश्या पात्र के माध्यम से लेखक ने उस सारी व्यवस्था पर तीखा व्यंग कसा है जो इंसानियत का गला घोटने पर तुली हुई है।

सड़क के किनारे

प्रस्तुत कहानी में औरत की त्रासदी तथा समाज व्यवस्था उसपर किस तरह जुल्म ढ़ाती है इसका चित्रण किया गया है। मर्द उसे फँसाता है और अपनी वासना ठंड़ी कर उसे उसी हालत में छोड़ जाता है। वह उसे मनाने की कोशिश करती है लेकिन वह उसे लाथाड़के चला जाता है। उन दोनों के मिलन के घड़ी का प्यार निशान बन गर्भ धारण कर लेता है। इस अवस्था में औरत की स्थिति बहुत दु:खजनक बन पड़ती है। वह उसको जन्म देना चाहती है, पालना चाहती है मगर समाजव्यवस्था को यह मंजूर नहीं है वह उसे लेकर सड़क के किनारे मरने के लिए फेंक देती है। ऐसे कई नवजात शिशु मरनासन्न हालत में सड़क के किनारे पाए जात हैं। समाज की इस व्यवस्था पर लेखक ने टीका की है।

हारता चला गया

इस कहानी में गंगूबाई इस वेश्या के माध्यम से लगभग उस पेशे के सभी

वेश्याओं के हालातों का नजारा लेखक ने सामने रखा है। गंगूबाई की एक की समस्या हल हो जाने से या इस गंदे धंदे को रोकने से उस जैसी और वेश्याओं की समस्याएँ तो हल नहीं होंगी, वह तो इसी हालातों में जीते रहेंगे। इस बहुत बड़ी समस्यापर लेखक ने प्रकाश डाला है। व्यवस्था में ऐसे कई वेश्याओं का वर्ग है जो बहुतही गंदे, घिनौने जीवन को व्यतित करने पर मजबूर है। यह वातावरण लगभग उस पेशे के सभी जीवन में व्याप्त है, फैला हुआ है। किसी एक की समस्या मिटने से इस वर्ग की यह बहुत बड़ी समस्या नहीं मिट सकती। समाज-व्यवस्था के इस फैली गंदगी की शोचनीय अवस्था को यहाँ व्यक्त किया गया है और उस पूरे गंदे वर्ग को जो समाज का एक हिस्सा है, उनकी समस्याओं को त्रासदी को, समाजसम्मुख लाने की कोशिश की है।

महमूदा

एक अकेली, बेसहारा औरत जीवन व्यतित करने के लिए जिधर सहारा मिले उधर रास्ता तय करती हुई कदम बढ़ाती रहती है। फिर वह रास्ता गलत होनेपर भी उसे मजबूरन, स्थितियों की विवशता के कारण उसी रास्ते पर चलना पड़ता है। ऐसी कई औरतों का दर्शन जो न चाहते हुए भी परिस्थितिवश गलत रास्तों पर बहती चली जाती हैं, महमूदा इस पात्र के माध्यम से दिखाया गया है। स्थितियाँ, व्यवस्था इसके लिए जिम्मेदार होती है। इस व्यवस्था के जुल्म के कारण कई बेकसूर जीव गलत रास्तों पर चलने के लिए मजबूर किए जाते हैं। महमूदा की शादी होती है, वह सुंदर है लेकिन उसका पति नामर्द है। उसके घरपर गैरमर्दों का आना-जाना रहता है। फिर वह बहती चली जाती है इस गंदे रास्ते पर। आखिरकार वह पूरी तरह से वेश्या बन जाती है। व्यवस्था उसके इस हालात के लिए जिम्मेदार है और इस व्यवस्था पर लेखक ने प्रस्तुत कहानी द्वारा तीखा व्यंग्य कसा है।

मम्मी

मम्मी के चरित्र में मानवीयता भरी हुई है। भले ही उसके घर में पार्टियाँ चलती हो जिसमें शराब और लड़कियाँ भी शरीक होती हैं लेकिन गलत काम करनेसे वह हर किसी को रोकती है। पुलिस उससे दलाली का काम लेना चाहती थी और इंकार करने पर पुलिस ने सरकार से कहकर उसे पूना से हद्दपार करा दिया। व्यवस्था की इस भ्रष्ट नीति पर लेखक ने व्यंग कसा है।

दो गड्ढे

इस कहानी में पाकिस्तानी सरकार की व्यवस्था के प्रति व्यंग्य कसा गया है। तार घर के इस तरफ चौक में, मैकलोड रोड़ की तरफ जानेवाली सड़क के शुरू में जो दो गड्ढे

खुदे हुए थे, इनको लेकर लेखक ने व्यंग्य कसा है। कार्पोरेशन जो इसके लिए जिम्मेदार है, दोषी ठहराया गया है। इससे जो ट्रक, तांगा, सायकल, इंसान की जो हानी होती है, दर्शाया गया है। सिगरेट का ब्लैक-मेल, छोटे दुकानदारों का रोना आदि समस्याओं पर भी प्रकाश डाला गया है। व्यवस्था पर लेखक ने इस तरह से व्यंग्य कसा है -

''मेरी राय है कि हमारी सरकार को, फौरन ही, इन गड्ढों के उपर एक जाँच कमीशन बैठा देना चाहिए। जब तक यह कमीशन अपनी रिपोर्ट के कागजों से उनको भरेगी और बहुत-से गड्ढे खुद जाएँगे या खोद लिए जाएँगे, जिससे ऐसी दूसरी कमीशनों के लिए जगह पैदा हो सके।

तारघर के इस तरफ के दो गड्ढे जिंदाबाद। और उस तरफ के वे घोड़े और इंसान मुर्दाबाद जो इनमें गिर कर न मर सके।''[31]

शहीदसाज

एक निजाम कितना भ्रष्ट है तथा व्यवस्था में बसे हुए ऐसे भ्रष्ट लोगों का बहुत ही व्यंग्य भरा चित्र मंटो ने इस कहानी में खींचा है।

काठियावाड़ गुजरात का एक मुसलमान बनिया गलत तरीकों से बहुत धन कमाता है। फिर भी दिल की राहत के लिए वह नेक काम की तलाश करते-करते, वह लोगों को शहीद बनाने का नेक काम शुरू करत देता है। मंटो ने समाज-व्यवस्था में निहित ऐसी मानसिकता के लोगों पर तीखा व्यंग्य कसा है।

इस तरह से मंटो ने व्यवस्था पर करारा व्यंग्य कसा है।

5) शोषण की समस्या का चित्रण -

समाज में शोषक और शोषित दो वर्ग होत हैं। शोषक शोषितों का शोषण करते रहते हैं। उनपर अपना वर्चस्व प्रस्थापित कर जुल्म ढ़ाते रहते हैं और शोषित चुपचाप मजबूर होकर शोषण का शिकार बनते हैं। समाज की इस व्यवस्था पर लेखक ने व्यंग्य कसा है। शोषण की समस्या को अपनी कहानियों में प्रस्तुत कर उसे सामने लाया है।

सौ कैण्डल पावर का बल्ब

दलाल द्वारा औरत पर पीड़ाजनक शोषण का चित्रण यहाँ हुआ है। बरदाश्त करने की हद पार हो चुकने के बाद भी वह उसका शोषण करता है। औरत कई दिनों से सोई नहीं, वह त्रस्त है। उसे इतनी नींद आई हुई है कि वह सौ कैण्डल पावर के बल्ब की तेज रोशनी में भी सोती है। उसकी इस अवस्था के बावजूद उसे काम (वेश्या-व्यवसाय) करने के लिए मर्द (दलाल) प्रवृत्त करता है। शोषण के इस बड़ेही घिणौने रुप को लेखक ने प्रस्तुत किया है।

मंत्र

मौलवी के द्वारा चौधरी के परिवार का जो शोषण होता है, उसे कहानी में दिखाया गया है। मौलवी धोखे से चौधरी के परिवार के भोलेपन का फायदा उठाता है। वह वहाँ खाता-पिता है तथा उनसे सेवा करा लेता है। धोखे से शराब पिलाकर चौधरी की बेटी जीनाँ तथा बीवी फाताँ को अपनी वासना का शिकार बनाता है और भाग जाता है। मुल्ला-मौलवियों की ऐसी कामुकता, धोखाधड़ी तथा भोले लोगों के शोषण का चित्र कहानी में लेखक ने प्रस्तुत किया है।

हतक

इस कहानी की सुगंधी यह वेश्या भी व्यवस्था के शोषण से ग्रस्त है। एक तरफ तो सेठ (ग्राहक) लोगों के शोषण का वह शिकार बनती है और एक तरफ माधो जैसे लोगों का, जो चिकनी-चुपड़ी बातों में फँसाकर, नाटक कर उसका इस्तमाल तथा फायदा लेते हैं, शोषण का शिकार होती है। शोषण का बड़ा ही दर्दनाक रुप जो सुगंधी के मनोमस्तिष्क में छाया हुआ है, लेखक ने प्रस्तुत किया है।

इसप्रकार शोषण की समस्या को मंटो ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

6) व्यक्तिचित्रों का तथा मानवीयता का दर्शन -

मंटो व्यक्तिचित्रों के बादशाह थे। वे 'व्यक्ति' के हिमायती थे। उन्होंने व्यक्ति के रेखाचित्र को खींचा है। और इन व्यक्तिचित्रों में मानवीयता भर दी है। उन्होंने अपनी बहुतसी कहानियों में सफल व्यक्तिचित्रों को उतारा है और बहुतसी कहानियों के नामकरण भी व्यक्तिप्रधान ही किए है। व्यक्तिचित्रों के साथ-साथ उनमें छुपी मानवीयता के भी दर्शन कराए है।

मैडम डीकॉस्टा

इस कहानी में मैडम डीकॉस्टा का रेखाचित्र मंटो ने खींचा है। उनका रहन-सहन, तौर-तरीके, मानसिकता आदी को रेखांकित किया है। बच्चा पैदा करने के अनुभव से तथा उस हालत से वह भलिभाँती वाकिफ है। उसके औरों से संबंध किस प्रकार है, यह भी लेखक ने कहानी में बताया है। मुहल्लेभर की जानकारी रखने की उनकी आदत तथा अपने बच्चों से उनका संबंध आदि को भी लेखक ने उजागर किया है। बच्चा पैदा होने के समय का सही अंदाजा तथा इस स्थिति की सारी बातों की उन्हें जानकारी रहती है और ऐसी स्थिति की पासपड़ोस की औरतों की वह खास जानकारी रखती है तथा उनका खयाल करती है। अत: मैडम डोकॉस्टा के रुप में मानवीयता का दर्शन लेखक ने कराया है।

दूदा पहलवान

एक अंगरक्षक तथा मित्र की हैसियत से दूदा सलाहो का खयाल रखता है। दूदा को उसकी काफी फिकर लगी रहती है। वह बुरी आदतों से दूर है। उसे फँसाने की कई कोशिशों के बावजूद वह उसमें फँसता नहीं। सलाहो जब बूरे रास्ते में फसता जाता है, तब कदम-कदम पर वह उसे समझाने तथा बचाने की कोशिश करता है। आखिर में सलाहो पर आई मुसिबत के लिए खुद के वचन, वसूलों को तोड़कर, खुद को एक वेश्या के हवाले कर वह उसे बचाता है। दूदा का जीवन मानो सलाहो के लिए ही बना हुआ है, इस तरह वह उसका खयाल रखता है और उसे निभाता भी है। यहाँ भी दूदा इस पात्र में मानवीयता का दर्शन होता हैं।

बाबू गोपीनाथ

बाबू गोपीनाथ की रंड़ीबाजी और दोस्तपरस्ती में और जीनत की बेवकूफी बल्कि बेहिसी में अजीब तरह का काला हास्य है। ऐसा लगता है जैसे मंटो रंड़ीबाजी के इस माहौल के बखिये उधेड़कर उस वर्ग को अंदर बाहर से देख रहे हों जिसके अत्याचारों से यह घिनौना माहौल पनपता है लेकिन मंटो दिखाते हैं कि धोखाधड़ी और गंदगी के इस माहौल में एक रौशन लकीर, खुशदिली, ठिठोल और निश्चलता व त्याग की भी है लेकिन त्याग वह नहीं जो बताने और जताने के लिए होता है बल्कि वह बेमेल लगाव जिसका उजाला किसी झरने की तरह अंदर से फूटता है और जिसमें कोई मोल-तोल, कोई सौदा नहीं होता, कोई स्वार्थ कोई लेन नहीं होता मात्र देन ही देन होता है। दरअसल त्याग भी इस प्रकार के भाव के लिए एक मामूली सा शब्द है। लगता है मंटो की कला ने रंड़ी की रूह में दबी जिस करुणा और ममता को सुगंधी में कर्यान्वित करने में अपने शिखर को पा लिया, बाबू गोपीनाथ उसी सिक्के का दूसरा पक्ष है, यानी मर्दाना पक्ष। कंजरों और भड़वों की हरामखोरी, लूट-खसोट और गंदगी के अंधकार में मंटो ने जिस तरह इस नूर को काढ़ा है, मंटो का हिस्सा है।[32] और साथ-साथ जीनत की शादी करने का जो काम बाबू गोपीनाथ करता है निश्चय ही उसमें इंसानियत के दर्शन होते हैं।

मम्मी

मम्मी कहानी के मम्मी की चारित्रिक विशेषताओं को लेखक ने उजागर किया है। मम्मी के घर में देर रात तक पार्टियाँ चलती रहती हैं। उन पार्टियों में शराब और लड़कियाँ भी होती हैं। मुहल्ले के ज्यादातर लोगों की समस्याएँ सुलझाने में वह हमेशा आगे रहती है। एक माँ की तरह उसका बर्ताव होता है। उस गंदे वातावरण में रहने के बावजूद उसका चरित्र एक आदर्श को लेके रोशन होता हुआ नजर आता है। मंटो ने 'मम्मी' इस पात्र में इंसानियत तथा मानवीयता की तलाश की है।

मम्मद भाई

वैसे तो मम्मद भाई गली का गुंडा है, सब उसे उस गली का दादा समझते हैं। लेकिन मंटो ने उसके नर्म दिल की बारिकियों को बड़ी ही सूक्ष्मता से उतारा है। उसको अपनी मूँछों से बहुत लगाव है। यही एक चीज है जो उसके मासूम चेहरे को दादा कहने के काबिल बना देती है। इसलिए वह अपने मुँछों से बहुत प्यार करता है। गली की छोटी-बड़ी समस्याओं को वह दादागिरी से, अपने अंदाज में हल करता है। उस मुहल्ले में उसका नाम काफी मशहूर है। लेखक को भी उससे कोई संबंध या जानपहचान न होने के बावजूद बिमारी से बचाता है। वह किसी से ड़रता नहीं है लेकिन एक बार किसी केस में फँसने की वजह से किसी के कहने पर अदालत में जाने का वक्त आनेसे वह अपनी मूँछों को साफ करता है, निकालता है। लेकिन इतना बड़ा यह दादा, उसे बाद में पश्चात्ताप होता है कि किसीसे न ड़रनेवाला यह मम्मद भाई खुद अपनी मूँछों से ड़र गया। यहाँ मम्मद भाई इस पात्र का बड़ा ही सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखक ने प्रस्तुत किया है। जिसमें मानवीयता भरी हुई है।

जानकी

साधारणतया ममता से मुहब्बत व खिदमत का जो स्त्रोत मुराद है, उस मानी में देखना हो तो 'जानकी' से ज्यादा इस अपेक्षा पर कौन पूरा उतर सकता है। जानकी हालाँकि रंड़ी नहीं, लेकिन एक मर्द से दूसरे के उपभोग में आती-जाती रहती है, यानी शोषण का साँचा और तकाजा बदलता रहता है, लेकिन नहीं बदलते तो जानकी के जज्बात जिनसे ममता की फुहार बरसती रहती है। वह पेशावर से बंबई पहुँचती है। पेशावर में वह अजीज की प्रेमिका थी और दिन-रात अजीज की देखभाल में लगी रहती थी, उसकी दवा-दारू और इलाज-उपचार से लेकर उसके खाने-पीने और पहनने-ओढ़ने तर हर चीज का जानकी खयाल रखती थी और वह सब कुछ वह अपने शौक से करती थी। बंबई आने के बाद धीरे-धीरे वह सैयद की देखभाल करने लगी। अजीज को उसका यह तौर पसंद न आया। बाद में सैयद ने भी उसको छोड़ दिया तो उसने नारायण से रिश्ता पैदा कर लिया।

मर्द चाहे कोई हो और उसका स्वभाव कैसा भी हो, जानकी, जानकी रहती है, यानी मुहब्बत व नेकी व त्याग का अमर स्त्रोत।

टोबा टेकसिंह

इस कहानी में बिशनसिंह इस पागल की मनोवृत्ती को कहानी में कहा गया है। लेखक भी पागलखाने के अनुभव से गुजर चुके थे। शायद उन्हें इस कहानी में उस अनुभव का भरपूर फायदा मिला होगा। हिंदुस्तान-पाकिस्तान बँटवारे के बाद के माहौल का पागलों पर भी

किस हदतक परिणाम हुआ यह कहानी में दिखाया गया है। बिशनसिंह को टोबा टेकसिंह जो उसका गाँव है वह हिंदुस्तान में है या पाकिस्तान में यह सवाल हमेशा परेशान करता रहता है। इस दौरान की पागलखाने में उसकी मनोदशा को लेखक ने उचित अभिव्यक्ति दी है। आखिरकार तबादले के वक्त वह 'नो मैंस लैण्ड' में पछाड़ खाकर गिरता है। यहाँ एक पागल के चित्रण और उसपर विभाजन के हुए असर को लेखक ने प्रस्तुत किया है।

मोजेल

मोजेल इस पात्र के अस्तित्व की दिशाएँ ही भिन्न हैं। वह हर तरह के मजहबी आचरण और दिखावे के विरुद्ध है। वह एक खुशमिजाज, खुशबाश, लाऊबाली यहूदी लड़की है जो बात-बात पर त्रिलोचन और सिख शक्ल-सूरत का मजाक उड़ाती है लेकिन यही मोजेल वक्त आने पर त्रिलोचन का साथ देती है, फसाद लूट पड़ने पर त्रिलोचन के साथ दंगाग्रस्त इलाके में मर्दाना वार जाती है और त्रिलोचन की मंगेतर कृपाल कौर को बचाते-बचाते खुद दंगाइयों का शिकार हो जाती है। यहाँ परिप्रेक्ष्य किसी कोठे या बाजारू औरत का नहीं, लेकिन मोजेल के जरिए मंटो एक बाद फिर यह साबित करने में कामयाब नजर आते हैं कि एक ऐसी घड़ी में जब बर्बरता आम रवैया है और इंसान गुनाह के गड्ढे में गिरा हुआ है, एक मामूली आवारा स्वभाव लाऊबाली लड़की रोशनी की किरण बनकर मुक्ति प्रदान करनेवाली सिद्ध होती है।[33] यहाँ मोजेल पात्र द्वारा मानवीयता का दर्शन होता है।

रामखेलावन

रामखेलावन बंबई का धोबी है जो लेखक के कपड़े ले जाता है। लेखक के भाई से उसकी पहचान थी, वे अच्छे थे इसलिए वह लेखक को भी उसी नजरिए से देखता था। वह नेक था। हिसाब-किताब में कमज्यादा को अनदेखा करता था। लेखक की बीवी ने उसे एक बार खतरनाक बिमारी से बचाया था। उसका वह एहसान मानता है। दंगों की स्थितियों में बहकावे में आकर वह जब लेखक पर हाथ उठाने आता है तब जल्द ही उसे एहसानों की याद आती है और उसे पश्चाताप होता है। उसकी मनोदशा का ठीक वर्णन इन शब्दों में व्यक्त होता है, ''उसने रोना शुरु कर दिया और कहने लगा, 'साब मुझे माफ कर दो - यह सब दारू का कसूर था... और दारू... दारू आजकल मुफ्त मिलती है - सेठ लोग बाँटता है कि पीकर मुसलमान को मारो - मुफ्त की दारू कौन छोड़ता है, साब - हमको माफ करो - हम पियेला था... साईद शालिम बालिस्टर हमारा बहुत मेहरबान होता - हमको एक पगड़ी, एक धोती, एक कुर्ता दिया होता... जुलाब से हम मरता होता - वह मोटर लेकर आता। डॉक्टर के पास ले जाता। इतना पैसा खर्च करता - तुम मुलक जाता - बेगम साब से मत बोलना,

रामखेलावन...' उसकी आवाज गले में धँस गई।''[34] रामखेलावन पात्र में इंसानियत के दर्शन होते है।

हतक

मंटो की सृजनात्मक दृष्टि वेश्या की लाज-सज्जा या अंदाज व ढ़ंग पर नहीं बल्कि उसकी आंतरिक स्थिति पर केंद्रित होती है। जब वह बाहरी लिबास से हटकर मात्र एक औरत रह जाती है, हाड़-माँस की नर्मदिल औरत। मंटो की कला औरत के आंतरिक अस्तित्व से संबोधित होती है। मंटो का विषय पेशेवर तवायफ या सुसज्जित गुड़िया हरगिज नहीं, बल्कि मंटो का विषय पेशा करनेवाली औरत के अस्तित्व की करार या उसकी रुह का दुख या उसके अंदर का सूनापन है जिसको कोई बाँट नहीं सकता। मंटो की कहानियों में ऐसे मौकों पर गौर से देखा जाए तो सजावटी बाह्य रुप की ओट से औरत का अंतर ऐसे झाँकने लगता है जैसे पत्तियों को हटाकर कोई कली चटकने लगती है। ऐसे स्थान पर वेश्या का अस्तित्व कोई सीमित पात्र न रहकर जैसे सृष्टि की दर्दमंदी के अथाह संगीत का हिस्सा बनकर औरत के आर्की इमेज से एकसार हो जाता है। 'हतक' की सुगंधी एक ऐसी ही हीन व कमजोर, प्यार के दो बोलों को तरसी हुई, निचुडी, मली-दली, बेबस व बेसहारा औरत है लेकिन अपमान के चरम से गुजरने के बाद वह स्वाभिमान के उस लम्हे पर पहुँचती है जब वह औरत के पूरे अस्तित्व पर आच्छादित नजर आती है। मंटो ने कहानी के आरंभ ही से सुगंधी की सादगी और सरलता का और मुहब्बत के दो बोलों को तरसने का और माधो से फरेब खाने और निरंतर लुटते रहने का उल्लेख किया है, माँ के आर्किटाईप इमेज का बीज वहीं से सर उठाने लगता है।

''मुझ में क्या बुराई है?'' सौगंधी ने यह सवाल हर उस चीज से किया था जो उसकी आँखों के सामने थी। गैस के अंधे लैंप, लोहे के खंबे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और सड़क की उखड़ी हुई बजरी - इन सब चीजों की तरफ उसने बारी-बारी देखा फिर आसमान की तरफ निगाहें उठाई जो उसके ऊपर झुका था मगर सुगंधी को कोई जवाब न मिला। जवाब उसके अंदर मौजूद था। वह जानती थी कि वह बुरी नहीं अच्छी है। पर वह चाहती थी कि कोई उसका समर्थन करे - कोई - कोई - उस वक्त कोई उसके कंधों पर हाथ रखकर सिर्फ इतना कह दे, ''सुगंधी कौन कहता है तू बुरी है, जो तुझे बुरा कहे वह आप बुरा है।'' नहीं यह कहने की कोई खास जरुरत नहीं थी। किसी का इतना कह देना काफी था, ''सुगंधी तू बहुत अच्छी है।''

''वह सोचने लगी कि वह क्यों चाहती है कि कोई उसकी तारीफ करे। इससे पहले उसे इस बात की इतनी शिद्दत से जरुरत महसूस नहीं हुई थी। आज क्यों वह बेनाम चीजों को भी ऐसी नजरों से देखती है जैसे उन पर अपने अच्छे होने का एहसास जारी करना

चाहती है। उसके जिस्म का पोर-पोर क्यों माँ बन रहा था - वह माँ बनकर धरती की हर वस्तु को अपनी गोद में लेने के लिए क्यों तैयार हो रही थी? उसका मन क्यों चाहता था कि सामने वाले गैस के खंबे के साथ चिमट जाए और उसके सर्द लोहों पर अपने गाल रख दे - अपने गर्म-गर्म गाल और उसकी सारी सर्दी चूस ले।''

यहाँ शब्दों के पर्दों से क्या 'जननी' का वह चेहरा नहीं झाँक रहा जो मर्द को जनती है, फिर उसके हाथों सब जिल्लत बर्दाश्त करती है, वजूद की शिकस्त के चरम तक पहुँचती है, रेजा-रेजा टुकडों को जिनमें से हर टुकड़ा सर्दियों की पीड़ा का प्रतिबिंब है, एकत्र करती है और फिर खुद ही वजूद के सम्मान को बहाल करती है। यह रचना के मंडलीय कृत्य का रहस्य है। सुगंधी एक वेश्या है लेकिन उसके अंतर्मन में यह कैसी सरसराहट है। इन वाक्यों को दोबारा देखने की जरूरत है।

''आज क्यों वह बेजान चीज को भी ऐसी नजरों से देखती है जैसे उनपर अपने अच्छे होने का एहसास जारी कर देना चाहती है। उसके जिस्म का पोर-पोर क्यों 'माँ' बन रहा था - वह माँ बनकर धरती की हर वस्तु को अपनी गोद में लेने को क्यों तैयार हो रही थी?''

क्या यह 'करुणा' के विशाल रुप का या ममता अर्थात औरत के अलौकिक और सृजनात्मक अस्तित्व का चेहरा नहीं जो सृष्टि के भेद भरे संगीत का हिस्सा है, लेकिन जो कानों में उसी वक्त आता है जब हम जाहिरी नियमित यथार्थ के हदबंदी में घिरी आँखों को बंद कर लेते हैं और अंदर की आँखों से पाठ की आत्मा में सफर करते हैं। करुणा की यह अंदरुनी लहर पूरे बयान की Irony में जारी रहती है जो सुगंधी और माधो के रिश्ते के अंतर्विरोध की सूरत में रुपांतरित होता रहता है। यहाँ तक कि रात के पिछले पहर की रहस्यमय खामोशी में टॉर्च की चकाचौंध और सेठ की 'ऊँह' रुटीन को झिंझोड़ कर रख देती है, ''गाली उसके पेट के अंदर से उठी और जबान की नोक पर आकर रुक गई। वह आखिर गाली किसे देती। मोटर तो जा चुकी थी। उसकी दुम की सुर्ख बत्ती उसके सामने बाजार के अँधियारे में डूब रही थी और सुगंधी को ऐसा महसूस हो रहा था कि लाल-लाल अंगारा 'ऊँह' उसके सीने में बर्मे की तरह उतरती चली जा रही...''

इस भयानक सदमे की हालत में माधो के साथ जो भी हुआ कम था। यहाँ अस्तित्व के आतंक और कड़वी उदासी को मंटो ने जिस तरह उभारा है कलात्मक सौंदर्य का अद्‌भूत नमूना है। जिंदगी के शेड़ में खड़ी सुनसान खाली ट्रेन जो मंटो की कला में औरत के अस्तित्व का रुपक है, मंटो ने इसको यहाँ भी उभारा है और सूनेपन व सन्नाटे की स्थिति का अजीबो-गरीब प्रभाव पैदा किया है :

''खारिशजदा कुत्ते ने भौंक-भौंककर माधो को कमरे से बाहर निकाल दिया। सीढ़ियाँ उतरकर जब कुत्ता अपनी टुंड-मुंड हिलाता सुगंधी के पास वापस आया और उसके कदमों के पा बैठकर कान फड़फड़ाने लगा तो सुगंधी चौंकी - ऐसा सन्नाटा जो उसने पहले कभी न देखा था, उसे ऐसा लगा कि हर शय खाली है जैसे मुसाफिरों से लदी हुई रेलगाड़ी स्टेशनों पर मुसाफिर उतारक अब लोहे के शेड़ में अकेली खड़ी है...'' [35]

मंटो ने वेश्याओं पर और भी कई कहानियाँ लिखी हैं, लेकिन 'हतक' में पहली बार मंटो ने उस सारी व्यवस्था को अपने आक्रोश का निशाना बनाया हे, जिसमें सुगंधी जैसी औरतें, शोषण का शिकार बनने पर मजबूर होती हैं। 'हतक' को वेश्याओं की जिंदगी पर किसी भारतीय कथाकार द्वारा लिखी गई कहानियों की पहली पंक्ति में रखा जा सकता है। अत: प्रस्तुत कहानी में सुगंधी इस वेश्या-पात्र का चित्रण मंटो ने बहुत ही गहराई से किया है।

वेश्याओं के जीवन से संबंधित कहानियों में काली सलवार की सुल्ताना तथा खुशिया का खुशिया इन पात्रों के चित्रण को भी लेखक ने साकार किया है।

इस तरह उपर्युक्त कहानियों में व्यक्तिचित्रों का तथा मानवीयता का दर्शन होता है।

7) समाज में निहित अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी का चित्रण -

समाज में अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी की समस्या अपना मुँह फैलाए खड़ी है। आज भी यह समस्या अपने तीव्र रुप को धारण किए हुए है। मुल्ला-मौलवीयों की धोखाधड़ी, धार्मिक अंधविश्वासों में जकड़ी भोली-भाली जनता, संतानप्राप्ति आदी के लिए होते अंधविश्वास के बली आदि का चित्रण लेखक ने अपनी कहानियों में किया है। लेखक ने इस समस्या को उखड़कर सामने रखा है ताकि समाज इससे सावधान रह सके। उनकी निम्नलिखित कहानियों में यह समस्या दिखाई देती है।

मंत्र

इस कहानी में धार्मिक अंधविश्वास में फँसकर देहात के एक भोलेभाले किसान चौधरी मौजू का परिवार मौलवी के जाल में आ जाता है। मौलवी इस भोलेपन का फायदा उठाकर उनसे सेवा तो लेता ही है अत: अपनी वासना शांत करने के लिए धोखेसे चौधरी की बेटी जीनाँ और पत्नी फाताँ को भी अपने शिकंजे में फँसाता है। इतना सबकुछ होने के बावजूद भी चौधरी मौजू उसे अल्ला ने अपने काम के लिए भेजा हुआ करामाती बुजुर्ग समझता है।

इस तरह समाज में फैली अंधविश्वास की तथा मुल्ला-मौलवी आदियों की धोखाधड़ी की समस्या को लेखक ने चित्रित किया है।

शाहदोले का चूहा

संतानप्राप्ति के लिए औरत अंधविश्वास के शिकंजे में फँस जाती है। प्रस्तुत कहानी में भी सलीमा किसी के कहने पर संतानप्राप्ति के लिए गुजरात के शाहदोले साहब के मजार पर मन्नत करती है। जब पहली संतान होती है तब उसे उनके नियमानुसार चढ़ावे के रुप में खानकाह पर चढ़ाती है। उसके लिए वह बहुत तरसती है। फिर उसे खोजने की कोशिश भी करती है लेकिन वह नहीं मिलता। वहाँ ऐसे संतानों को शाहदोले का चूहा या चुहियाँ बना दिया जाता, जिनका शारीरिक विकास तो होता है लेकिन मानसिक नहीं और मनोरंजन के लिए, तमाशा दिखाने के लिए उनका उपयोग किया जाता था। वो किसी के रोजी-रोटी के साधन बनते थें। इस संतान के बाद सलीमा को दो और संतान होते हैं, लेकिन पहली संतान के लिए वह तरसती रहती है। एक दिन तमाशा दिखाने के लिए आया हुआ शाहदोले का चूहा उसका बेटा होता है, वह उसे पहचानती है, उसे खरीदती भी है लेकिन वह उसके हाथ से निकला जाता है और उसकी ममता उसके लिए तरसती रहती है।

इस प्रकार लेखक ने अंधविश्वास तथा धोखाधड़ी का चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

8) प्रकृतिगत या स्वभावगत आवश्यकताओं का अवलंबन -

मंटो की तलाश, दरअसल, लुप्त होती इंसानियत की तलाश है। यही वजह है कि प्रकृती के खिलाफ जो कुछ होता है - उसे मंटो एक लानत समझते हैं। वे प्रकृति हे हिमायती हैं। जो भी चीज इंसान की स्वाभाविक और प्राकृतिक अच्छाई पर आघात करती है, वे उसके खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते हैं। साथ ही प्रकृति के प्रकृतिगत रसास्वादन और कृत्रिमता में भेद स्पष्ट किया है। वे प्रकृति से एकसंग होना चाहते हैं - उसमें समा जाना चाहते हैं, उसकी महक अनुभव करना चाहते हैं, उसका आस्वादन लेना चाहते हैं जो कृत्रिमता में हरगिस तलाशी नहीं जा सकती। कृत्रिमता का उपहास कर प्रकृतिगत रूपों को वे स्विकारना चाहते हैं। इसीलिए उनकी बहुत-सी कहानियाँ, कहानीपन को लाँघकर, मानव-नियति के दस्तावेज बन गई हैं।

स्वराज्य के लिए

यह एक अधिक गहरी और आक्रोश भरी कहानी है, जिसमें मंटो ने अपनी बहुत-सी मान्यताओं को एकाग्र रुप में अभिव्यक्त किया है। कहानी महात्मा गांधी और उनके आंदोलन को पृष्ठभूमि में लेकर चलती है और उन आदर्शों की व्यर्थता सिद्ध करती है, जो यथार्थ पर आधारित नहीं होते या जो किसी खास व्यक्ति के सच होते हैं। मंटो ने इस कहानी

में प्रकारांतर से यह स्वीकार तो किया है कि आदर्श, जहाँ तक कि वे मनुष्य की प्राकृतिक अच्छाई को बढ़ाने में योग दें - प्रशंसनीय है; लेकिन वे उनका अंधानुकरण करने के सख्त खिलाफ हैं।

लेकिन 'स्वराज्य के लिए' सिर्फ गांधीवाद पर बस नहीं करती, वरना उसे प्रतीक-रुप में लेकर, वह उन सारे वादों पर भी चोट करती है, जो आदमी को नेक काम करने के लिए मदारी का चोला पहना देना चाहते हैं। किसी भी महत उद्देश्य को हासिल करने के लिए यह जरूरी नहीं कि आदमी अपनी इंसानियत तज कर, करिश्मबाजी पर उतर आये जैसा कि 'स्वराज्य के लिए' के बाबाजी करते हैं। एक व्यक्ति, जब अपने व्यक्तित्व द्वारा, संमूह को भेड़ बकरियाँ बनने के लिए प्रेरित करता है तो मंटो उसे इंसान की स्वभावगत अच्छाई और आजादी का अपमान समझते हैं। कहानी में उनके आदर्शोंपर चलने के लिए गुलाम अली एवं निगार शादी के वक्त, बच्चे न पैदा करने की कसम खाते हैं और दोस्त की तरह संबंध रखने का फैसला करते हैं। प्रकृतिगत और स्वभावगत सेक्स की माँग को रोकते रोकते वचन को निभाते-निभाते उनकी बहुतही दर्दनाक हालत होती है। उस हालत में आक्रोश भरा हुआ दिखाई देता है। गुलाम अली की चीख में लेखक अपना स्वर मिलाना चाहते हैं :

'इंसान जैसा है, उसे वैसा ही रहना चाहिए। नेक काम करने के लिए क्या यह जरूरी है कि इंसान अपना सिर मुँडाये, गेरूए कपड़े पहने और बदन पर राख मले?... दुनिया में इतने सुधारक पैदा हुए हैं - उनकी तालीम को तो लोग भूल चुके हैं, लेकिन सलीबें, धागे, दाढ़ियाँ, कड़े और बगलों के बाल रह गये हैं... जी में कई बार आता है, बुलंद आवाज में चिल्लाना शुरू कर दूँ - खुदा के लिए, इंसान को इंसान रहने दो, उसकी सूरत को तुम बिगाड़ चुके हो - ठीक है - अब उसके हाल पर रहम करो, तुम उसको खुदा बनाने की कोशिश करते हो, लेकिन वह गरीब अपनी इंसानियत भी खो रहा है।'[36]

आखिरकार वचन तोड़ प्रकृतिगत एवं स्वभावगत सेक्स की माँग को अपनाकर संतानप्राप्ति के बाद ही वह तृप्त होता है।

मंटो की दृष्टि उस हस्तक्षेप पर जाती है, जो व्यक्ति समाज के प्रति करता है - जब निजी आदर्शों के फंटीले परिधान में समाज की निजता आहत होती है। प्राय: सभी देशों में, जहाँ जनता धार्मिक अंध:विश्वासों में जकड़ी हुई है, राजनीति किस प्रकार धर्म के माध्यम से व्यक्ति की सामाजिकता पर अपनी बदनुमा छाप छोड़ती है और व्यक्ति को गैर-ईमानदार होने पर मजबूर करती है - यह भी मंटो ने, इस कहानी के माध्यम से, अभिव्यक्त करना चाहा है। इसीलिए यह कहानी उस युग की सच्ची तस्वीर ही नहीं है, जिसे मंटो ने देखा था, वरन उसकी कटुतम आलोचना भी है, क्योंकि उन सारे आदर्शों की तह में एक ऐसी घिनौनी सौदेबाजी काम कर रही थी - जिससे, बकौल मंटो, सारा आंदोलन ठंडी लस्सी में बदल गया।[37]

बू

इस कहानी को मौसमों के आने-जाने, बारिश की बुंदों के गिरने और धरती की प्यासी कोख के भीगने या पुरुष और प्रकृति के मिलाप के स्वप्नफल के रुप में भी पढ़ा जा सकता है और इसमें एक अजीब रहस्य और आत्मविस्मृति है। मंटो ने सृजनात्मक तल्लीनता में कहानी को जिस तरह बुना है, उसमें बादलों के घिर आने और पीपल के पत्तों के सरसराने और नन्हीं-नन्हीं बूँदों में नहाने का बार-बार जिक्र आता है, यूँ घाटन और बतौर प्रकृति बार-बार मानसपटल पर उभरती है - ''बरसात के यही दिन थे। खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते... रात के दूधिया अँधेरे में झूमरों की तरह थरथरा रहे थे - जब उसने अपना सीना उसके सीने के साथ मिलाया तो रंधीर के जिस्म के हर रोंगटे ने उस लड़की के बदन के छिड़े हुए तारों की भी आवाज सुनी थी, मगर वह आवाज कहाँ थी? वह पुकार जो उसने घाटन लड़की के बदन की बू में सूंघी थी - वह पुकार जो दूध के प्यासे बच्चे के रोने से ज्यादा हर्षित करने वाली होती है, वह पुकार जो ख्वाब की परिधि से निकल कर बेआवाज हो गई थी।'' इस तरह कहानी के आखिर में जब घाटन नहीं बल्कि गोरी-चिट्टी लड़की - जिसका जिस्म दूध और घी में गुंधे हुए आटे की तरह मुलायम था लेटी हुई है, तब फिर बरसात के यही दिन थे, ''रंधीर खिड़की से बाहर देख रहा था। उसके करीब ही पीपल के नहाए हुए पत्ते झूम रहे थे। वह उनकी मस्ती भरी कपकपाहटों के उस पार कहीं बहुत दूर देखने की कोशिश कर रहा था जहाँ मटमैले बादलों में अजीबोगरीब किस्म की रौशनी खुली हुई दिखाई दे रही थी - ठीक वैसी ही जैसी उस घाटन लड़की के सीने में उसे नजर आई थी। ऐसी रौशनी जो रहस्यमय बात की तरह दबी लेकिन स्पष्ट थी।'' इस कहानी को काम-भाव के आनंद की कहानी के रूप में पढ़ना मंटो की तौहीन करना है। पूरी कहानी में घाटन की कल्पना जिस्मानी कम और उत्कृष्टात्मक ज्यादा है - '' मटमैले रंग की जवान छातियों में, जो कुंआरी थी, एक अजीबोगरीब किस्म की चमक पैदा हो गई थी जो चमक होते हुए भी चमक नहीं थी। उसके सीने पर ये उभार दो दीये मालुम होते ये जो तालाब के दले पानी पर जल रहे थे। रणधीर 'पुरुष' है और घाटन 'प्रकृति' जो प्रत्यक्षत: निष्क्रिय है लेकिन पूरे इंसानी अस्तित्व को बाँहों में लिए हुए है और सुख व आनंद को देने और लेने वाली है।[31] इस तरह घाटन को प्रकृतिरूप में ढ़ाल कर पुरुष से उसके मिलाप को कहानी में दिखाया गया है।

इस प्रकार लेखक प्रकृति के हिमायती होने के नाते उन्होंने अपनी कहानियों में प्रकृति से सरोकार, स्वीकार, उससे एकसंगता तथा खिलाफ न जाकर उसके हिमायतीपन को उसके अवलंबन के पक्ष को दिखाया है।

9) खत्म होते इंसानियत का चित्रण -

इंसान वहीं होता है, जो इंसानियत की नींव रखता हो। समाज में कई इंसान ऐसे भी होते हैं जो हद से गिरे हुए होते हैं। जिनकी हैवानियत बरबसता को लेकर सामने खड़ी होती है। जिनके अंदर करुणा, दया नाम की कोई चीज नहीं होती या खुद वह एक इंसान है इसकी लेश मात्र भी संभावना नहीं होती। ऐसे घटकों से समाज दूषित होता रहता है बल्कि व्यक्ति, समाज तथा इंसानियत पर से ही विश्वास उठ जाता है। ऐसे व्यक्तियों के अमानवीय कृत्यों से जो दृश्य सामने उपस्थित होते हैं वह इंसान की इंसानियत के खात्मे का चित्रण मात्र प्रस्तुत करते हैं।

गुरमुखसिंह की वसीयत

गुरमुखसिंह का बेटा बाप के वचन को निभाने के लिए तो मियाँ अब्दुल साहब के घर सेवैयों का थैला लिए ईद के दिन आता है लेकिन सिर्फ बाप का वचन निभाने के लिए। वचन तो वह निभाता है लेकिन उस परिवार की बेबसी, करूणावस्था पर उसे यत्किंचीत भी दया नहीं आती जो कभी भी दंगलों का शिकार बन सकता है तथा बेबस है। अब्दुल साहब बीमारी में बिस्तर पर लेटे हुए हैं, बेटा और बेटी छोटे है तथा वह कुछ नहीं कर सकते। दंगों की स्थिति बहुत बिगड़ चुकी है, घर से निकलना भी मुश्किल है। बेबसी और भयाक्रांतता से सभी ग्रस्त हैं। कब क्या होगा कुछ कहा नहीं जा सकता। ऐसी स्थितियों में गुरमुखसिंह के बेटे के रुप में एक आशा उनके मन में जागती है लेकिन वह उन्हें उसी हालत में छोड़कर, दंगलधारकों के हाथ उन्हें सौंपकर निकल जाता है। यहाँ के खत्म होते इंसानियत का चित्रण लेखक ने किया है।

10) अश्लीलता के आरोप से मुक्त -

मंटोने समाज की गंदगी और घिनौनेपन को नजदीक से अनुभव किया और जिंदगी के जहर को इस प्रकार पिया कि उसका कसैला स्वाद मुंह से होते हुए उनकी आत्मा में उतर गया। जब उन्होंने समाज की इस गंदगी, घिनौनेपन और जिंदगी के जहर को अपनी कहानियों में उकेरा तो उनके द्वारा लिखी गयी कहानियों ने जन-मानस को झिंझोड़ दिया और समाज के ठेकेदार इस बात से तिलमिला उठे। उन्हें समाज की सच्चाई बर्दाश्त नहीं हुई इसलिए मंटो को अश्लील लेखक करार दे दिया गया और विभिन्न अदालतों में उन पर मुकदमे चलाए गए।

मंटो पर अश्लीलता के कारण पांच मुकदमे चलाए गए। जिन कहानियों पर मुकदमे चले वे हैं - 'काली सलवार', 'बू', 'ठंडा गोश्त', 'धुआँ', 'उपर, नीचे और दरमियान'। 'खोल दो' के लिए 'नकूश' पर प्रतिबंध लगाया गया। लेकिन आखिरी बार वे इतना थक गए

थे कि जब उन्हें जुर्माने की सजा सुनाई गई तो मंटों ने मुकदमा लड़ने की बजाय जुर्माना अदा करना ही बेहतर समझा। इन कहानियों में लेखक का मक्सद समाज में छुपे यथार्थ को खोलना तथा प्रकृतिगत सच्चाईयों को उजागर कर देना था लेकिन मुख्य विषय तथा समस्या को नजरंदाज करते हुए उन्हें अलग नजरिए से देखकर अश्लील करार दिया गया तथा मुकदमे चलाए गए। इन मुकदमों के बारे में देवेंद्र इस्सर द्वारा संपादित 'मंटो : अदालत के कटघरे में' इस किताब में काफी विस्तार से चर्चा की गई है। 'अफसाना निगार और जिंसी मसाइल' तथा 'कसौटी' इन लेखों में तथा मुकदमों के तहरीरी बयानों में भी उनके साहित्य में श्लील-अश्लीलता संबंध में विचार हैं जो उनपर लगे अश्लीलता के आरोप से मुक्त करने में सिद्ध होते हैं।

''मंटो को 'अश्लील' कहानीकार कहा गया। लेकिन उनके अंदर सेक्स की उच्छृंखलता नाममात्र भी नहीं। उनके उपन्यास 'बगैर उन्वान के' को पढ़कर उनके इश्क की कल्पना का बखूबी अंदाजा लगाया जा सकता है।

हमारे समाज, हमारी राजनीति और सरकारी तंत्र एवं अदब के अधिनायकों ने जो सलूक मंटो से किया उससे आहत होकर मंटो ने कहा -

'जी चाहता है कि अपनी तमाम तसानीक (रचनाओं) को आग में झोंककर कोई और काम शुरू कर दूं कि जिसका तखलीख (सृजन) से कोई वास्ता न हो। चुंगी के महकमे में मुलाजिम हो जाऊं और रिश्वत खाकर अपने बच्चों का पेट पाला करूं। न किसी पर नुक्ताचीनी करुं और न किसी मामले में अपनी राय दूं।' ''[39]

''मंटो ने आदमी की नियति को समझा है और उसमें साझेदारी की है। नियति की साझेदारी सीधे अपने वक्त के आदमी के साथ जुड़ती है और आदमी के साथ जुड़ना ही सही रचनाधर्मिता की पहली और महत्वपूर्ण शर्त है। मंटो ने इस शर्त को बखूबी निबाहा है और इस निर्वाह के लिए खासा खामियाजा भी भुगता है। अश्लीलता के नाम पर मंटो की 'काली सलवार', 'बू', 'नंगी आवाजें', 'ठंडा गोश्त', 'खुशिया' आदि कहानियों को जमकर दुत्कारा गया, इन्हें लेकर मुकदमे चले। मंटो ने किसी भी नजरिये से इन्हें अश्लील स्वीकार नहीं किया।... सही बात तो यह है कि मन और सोच की स्थितियाँ ही सही गलत स्थितियों को जन्म देती हैं। दर्शक, श्रोता और पाठक अपनी संवेदनाओं की तीव्रता के अनुसार दृश्य, श्राव्य और पठ्य से जुड़ते हैं और उनसे तद्नुरूप अर्थ ग्रहण करते हैं। जिस तरह अपने मन की करुणा का प्रतिफल न हम बाहर महसूसते हैं उसी तरह अपनी आंतरिक अश्लीलता का प्रतिफलन भी हम बाहर ढूंढते, देखते और महसूसते हैं। मंटो या कोई भी रचनाधर्मी इसी प्रतिफलन की प्रक्रिया का शिकार होता है।''[40]

उपेंद्रनाथ अश्कजी ने लिखा है, ''मंटो उतने बद नहीं थे, जितने बदनाम थे। वे बेहद भाव प्रवण लेखक थे। जब उनकी अपेक्षाकृत निरीह कहानी 'खुशिया' के खिलाफ किसी मजहबी पर्चे में सख्त नोट लिखा गया और उस पर अश्लीलता का इल्जाम लगाया तो उन लोगों को चिढ़ाने के लिए वे लगातार अश्लील कहानियाँ लिखते चले गये। जब व्यवस्था ने उनके खिलाफ मुकदमें चलाये तो मंटो ने उसी कलाकारिता और कटु यथार्थता से व्यवस्था के झूठ और जुल्म का पर्दा फाश किया।

मैंने मंटो की वे तथाकथित अश्लील कहानियाँ न सिर्फ कई बार स्वयं पढ़ी हैं, वरन् स्वयं यशपाल को भी सुनायी हैं। वे मुझसे सहमत थे कि वे भी ऐसी मानवीय संवेदना से भरी हैं, जो मन को कचोट जाती हैं। संवेदनशील पाठक को उनकी कचोट झकझोर जाती है और अश्लीलता कहीं भी नहीं छूती।''[41]

मंटो पर कई वार हुए। उनकी घायल आत्मा के वक्तव्य को देखिए : ''कहा जाता है कि मेरे दिलो-दिमाग पर औरत सवार है, मर्द के दिलो-दिमाग पर औरत नहीं तो क्या हाथी-घोडों को सवार होना चाहिए? जब कबूतरों को देखकर कबूतर गटकते हैं तो मर्द औरत को देखकर गजल या अफसाने क्यों न लिखे। औरतें कबूतरों से कहीं ज्यादा दिलचस्प, खूबसूरत और विचारशील हैं।''[42]

मंटो पर बार-बार मुकदमे चलाए गए, अदालतों, सेशन कोर्टों और हाईकोर्ट में घसीटा गया, तलाशियाँ और तलबियाँ हुईं, सम्मन जारी हुए, जुर्माने हुए, सजाएँ हुईं, यानी जिल्लत व रुसवाई का वो क्या सामान था जो नहीं हुआ। जब पीड़ा हद से गुजर जाए तो प्रतिवाद की इच्छा भी निकल जाती है। जब पूरा समाज और उसके साथ न्यायालय भी साहित्य से कल्याण और उपयोगिता का तकाजा करे तो बात भी उसी मुहावरें में करनी पड़ती है।

''अगर आप इन अफसानों को बर्दाश्त नहीं कर सकते तो इसका मतलब ये है कि जमाना नाकाबिले बर्दाश्त है। जिस खराबी को मेरे नाम से संबंद्ध किया जाता है वह दरअसल वर्तमान व्यवस्था की खराबी है।''

''जो लोग अश्लील साहित्य का या जो कुछ भी ये है, खात्मा कर देना चाहते हैं तो सही रास्ता यह है कि उन हालात का खात्मा कर दिया जाए जो इस साहित्य के प्रेरक हैं।''[43]

यहाँ स्पष्टत: मंटो यह कहते हुए नजर आते हैं कि इस तरह के साहित्य का समाजी हालात से एक और एक का संबंध है, यानी हालात बदल जाएँ तो साहित्य भी बदल जाएगा या साहित्य समाजी हालात को बदलने की क्षमता रखता है, या दूसरे शब्दों में साहित्य की अवस्था नैतिक या कल्याणकारी है। मंटो ने एक जगह साहित्य को 'कड़वी दवा' भी कहा है।[44]

अदब के मामले में मंटो हरगिज किसी तरह के समझौतेबाजी के पक्षधर नहीं थे। संभवत: उर्दू कहानीकारों में वह पहले शक्स हैं जिन्होंने अदब व आर्ट को बतौर अदब व आर्ट पहचानने और परखने पर जोर दिया यानी अदब व आर्ट (या सौंदर्यशास्त्रीय प्रभाव) की नैतिकता और मजहब से अपेक्षाकृत आज़ादी की कल्पना जो अदब की पहचान का आधार है।[45]

हकीकत के अपरिचित या सच्चाई के अलोकप्रिय रुप को देखने और सामने लाने की ख्वाहिश मंटो की कला का मूल प्रेरक है। मंटो-अध्ययन की यह विडंबना काफी रोचक है कि मंटो के उन 'बदनामे जमाना' पात्रों को मंटो की जिंदगी में तो गलत समझा ही गया, मंटो की मौत के बाद भी उनको ठीक से समझा नहीं गया।

इस बात पर ध्यान बहुत कम दिया गया कि मंटो ने बार-बार इस हकीकत पर जोर क्यों दिया हे कि ''हर औरत वेश्यानहीं होती लेकिन हर वेश्या औरत होती है।''[46]

उनका कहना है : ''कोई वक्त ऐसा भी जरूर आता होगा जब वेश्या अपने पेशे का लिबास उतारकर सिर्फ औरत रह जाती होगी।'' और इसी विचार से वेश्या के पीछे छुपी औरत का प्रकाशन उन्होंने अपनी कहानियों में किया है।

मंटो शदीद अफसोस प्रकट करते हैं कि हमारी संस्कृति का एक पक्ष यह भी है कि ''कुछ लोगों के नजदीक औरत का वजूद ही अश्लील है। दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जो पवित्र ग्रंथों से काम-इच्छा का आनंद हासिल करते हैं।''[47]

मंटो सवाल उठाते हैं कि अगर ऐसा होता तो फिर खुदा औरत की रचना ही क्यों करता, क्योंकि खुदा से कोई अपवित्र काम तो संपन्न नहीं हो सकता।

अश्लीलता की बहस करते हुए मंटो ने एक जगह कहा है : ''औरत और मर्द का रिश्ता अश्लील नहीं, उसका उल्लेख भी अश्लील नहीं। अगर मैं औरत के सीने का जिक्र करना चाहूँगा तो उसे औरत का सीना ही कहूँगा, मुँगफली, मेज या उस्तरा नहीं कहूँगा।''[48]

अश्लीलता और सनसनीखेजी का जवाब देते हुए मंटो ने एक मौके पर कहा था, ''मैं हंगामा पसंद नहीं। मैं लोगों के खयालात व जज्बात में उथल-पुथल पैदा करना नहीं चाहता। मैं सभ्यता व संस्कृति और सोसायटी की चोली क्या उतारूँगा जो है ही नंगी। मैं उसे कपड़े पहनाने की भी कोशिश नहीं करता। यह मेरा काम नहीं, दरजियों का काम है।''[49]

मंटो की कला का यह पहलू मामूली नहीं कि बाजारू औरतों और रंड़ियों की कहानियाँ सुनते हुए मंटो बार-बार उनके जिस्म से हटकर उनकी आत्मा का नजारा कराते हैं। मंटो बाजारू चीज या देह व्यापार से कहीं ज्यादा इस दर्द व पीड़ा का कलाकार हैं जो औरत की नियति से पैदा होता है, यानी मंटो बाह्य स्थिति से ज्यादा अंतर की पीड़ा के कलाकार हैं।

मंटो की कहानियों के एक वर्ग का बुनियादी सरोकार यौन-संबंधी अनुभवों के अर्थ और सत्य को समझना और व्याख्यायित करना हैं। इस वर्ग की कहानियों में चर्चित रही हैं - 'धुआँ', 'चुगद', 'नंगी आवाजें', 'मेरा नाम राधा है' और 'बू'। इन कहानियों पर अश्लीलता के आरोप लगे।

सवाल है कि मंटो की ये कहानियाँ क्या वाकई अश्लील हैं ?

इसका जवाब यह दिया जा सकता है कि शीलता या अश्लीलता विषय में नहीं बल्कि उसे देखने वाले की आँख में या पढ़ने वाले के मन में होती है। लेकिन यह एक ऐसी समार्न्यीकरण है जो सवाल की तह तक जाने में हमारी मदद नहीं करता। इसलिए अगर यह कहा जाए कि शीलता या अश्लीलता रचनाकार की मंशा में होती है तो इसके सहारे उपर्युक्त सवाल की तह तक पहुँचा जा सकता है। इस सिलसिले में खुद मंटो ने एक मिसाल दी है जो काबिले गौर है।

एक आर्ट गैलरी में नुमाईश के लिए नंगी औरतों की बहुत-सी तसवीरें पेश हुई। उनमें से किसी ने भी जैसा कि जाहिर है, देखने वालों का अखलाक खराब न किया और शहवानी जज्बात को उभारा। अलबत्ता एक तसवीर, जिसमें औरत का सारा बदन तो कपड़ो में छिपा हुआ था, सिर्फ एक खास हिस्सा इस तरकीब से आधा उघड़ा छोड़ दिया गया था कि देखने वालों के जज्बात में गुदगुदी सी होती थी, अश्लील करार दी गई - क्यों? इसलिए कि आर्टिस्ट की नीयत में फर्क था। और उसने जान-बूझकर लिबास को कुछ इस तर ऊपर उठा दिया था कि देखने वालों के दिलो-दिमाग में हलचल स मच जाए और वो अपने तसव्बुर से मदद लेकर उस माधे उघाड़े हिस्से को उघाड़ा देखने की कोशिश करें।

यह है रचनाकार की मंशा जो श्लीलता-अश्लीलता का फर्क समझने के लिए कसौटी का काम कर सकती है। मंटो की कहानियाँ इस कसौटी पर खरी उतरती हैं क्योंकि मंटो ने नंगी सच्चाईयों को कलात्मक ईमानदारी से पेश किया है ताकि हम उन सच्चाईयों से सबरू होकर उनका विश्लेषण कर सकें और उन कारणों को समझ सकें जिनसे वे पैदा हुई हैं। मंटो के हर चित्रण में निस्संगता है और इसीलिए उसमें कलात्मक उँचाई तो मिलेगी मगर अश्लीलता नहीं।[50]

मंटो की कुछ कहानियों की पृष्ठ-भूमि सेक्स की है, लेकिन मंटो सेक्स का चित्रण करते हुए भी, उसे अश्लील नहीं होने देते। बहुत-सी दूसरी अनुभूतियों की तरह, सेक्स को भी मंटो एक स्वाभाविक प्रक्रिया मान कर, उसका सहज चित्रण करते हैं। चूँकि मंटो का उद्देश्य पाठक को 'गर्माना' भर नहीं है, वरन कहानी के माध्यम से गहरे, दबे-ढ़ँके एहसासों का चित्रण करना है, इसलिए उनकी ऐसी तमाम कहानियो में कहीं भी जुगुप्सा नहीं है।[51]

अत: मंटो ने समाज में छुपे यथार्थ को, नग्नता को तथा प्रकृतिगत सच्चाईयों को पूरी ईमानदारी से अपनी कहानियों के माध्यम से पेश किया। उनकी कहानियों मुख्यत: इंसान तथा समाज की समस्या, दु:ख, दर्द एवं पीड़ा की अनुभूति होती है और निश्चय ही उनकी महानता में अश्लीलता की कोई गुंजाईश नहीं है। अंतत: उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियों में अश्लीलता नहीं है। अश्लिलता के आरोप से उनकी कहानियाँ मुक्त हैं।

निष्कर्ष :-

मंटो की कहानियाँ अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण हैं। उन्होंने अपनी खास शैली में इन कहानियों को गढ़ा है। ज्यादातर कहानियों में मंटो खुद मौजूद हैं और उन्होंने जो देखा, अनुभव किया, महसूस किया उसे यथार्थ तथा मनोवैज्ञानिक भावभूमिपर उतार दिया है। विविधता उनके कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषता है। विविध विषय उनकी कहानियों में बिखरे पड़े हैं जो जीवन समाज तथा इंसान का चित्रण करते हैं। मंटो व्यक्ति के हिमायती थे इसलिए व्यक्ति को केंद्र में रखकर उन्होंने कई कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में आत्मनिवेदनात्मक शैली का इस्तमाल किया है जिससे उनकी कहानियों में यथार्थता तथा उनका अंतरंग खुलके दिखाई देता है। उन्होंने कुछ भी छुपाया नहीं बल्कि मन को यथार्थ भावभूमि पर निड़रता से खोलके रख दिया है। स्पष्टता तथा संवेदनशीलता को उनकी कहानियों में पाया जाता है। उनकी कहानियाँ राजनीतिक समझ, आक्रोश, दर्द, मानवीय करूणा, पीड़ा से ओतप्रोत हैं। उनकी कहानियों में किस्सागोई, जुमलेबाजी, नाटकीयता, निजी शैली आदी खास विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

निजी दृष्टिकोण और विचारधारा तथा अनुभव का प्रस्तुतीकरण उन्होंने अपनी कहानियों में किया है। उनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता, मुख्य रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपनी कहानियों के कई पात्रों के चरित्रों के मनोविज्ञान को कुशलता से निरूपित किया है। साथ ही बँटवारे के समय के माहौल का यथार्थ चित्रण, नारी पात्रों का सशक्त चित्रण, व्यवस्था पर करारा व्यंग्य, शोषण, व्यक्तिचित्रों का तथा मानवियता का दर्शन, प्राकृतिगत या स्वभावगत आवश्यकताओंका अवलंबन, समाज में निहित अंधविश्वास तथा धोखाधडी का चित्रण, ऐतिहासिकता, खत्म होते इंसानियत का चित्रण, अश्लीलता के आरोप से मुक्त आदि विशेषताएँ उनकी कहानियों में दिखाई देती हैं।

मंटो की कहानियाँ एक प्रभाव पाठक के मन-मस्तिष्क पर ड़ालती हैं जो उसकी अंतरात्मा को छू लेती है। अत: मानवियता का दर्शन तथा उसकी तलाश मुख्य रूप से उनकी कहानियों में दिखाई देता है।

* * *

संदर्भ -

1. उर्दू की चर्चित कहानियाँ, संपादक : देवेन्द्र इस्सर, पृष्ठ 6
2. वागर्थ - 129, साहित्य और संस्कृति का समग्र मासिक, अप्रैल 2006, पृष्ठ 23, 24
3. भारतीय साहित्य-कोश, संपादक : नगेंन्द्र, पृष्ठ 892
4. समकालीन उर्दू कहानियाँ, संपादक : देवेन्द्र इस्सर, पृष्ठ 13
5. मंटो की कहानियाँ, संपादक : नरेंन्द्र मोहन, पृष्ठ 129
6. वही, पृष्ठ 165-166
7. वही, पृष्ठ 102
8. वही, पृष्ठ 156
9. वही, पृष्ठ 157
10. वही, पृष्ठ 161
11. वही, पृष्ठ 183-184
12. वही, पृष्ठ 394
13. वही, पृष्ठ 62-63
14. वही, पृष्ठ 64
15. वही, पृष्ठ 66
16. वही, पृष्ठ 100
17. वही, पृष्ठ 101
18. वही, पृष्ठ 94
19. वही, पृष्ठ 287
20. वही, पृष्ठ 301-302
21. वही, पृष्ठ 310
22. वही, पृष्ठ 313
23. वही, पृष्ठ 477
24. वही, पृष्ठ 510
25. वही, पृष्ठ 436
26. वही, पृष्ठ 443
27. वही, पृष्ठ 464
28. वही, पृष्ठ 466
29. वही, पृष्ठ 480
30. वही, पृष्ठ 202

31. वही, पृष्ठ 386
32. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 18.
33. वही, पृष्ठ 19
34. मंटो की कहानियाँ, संपादक : नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ 474-475
35. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 15-16-17
36. मंटो की तीस कहानियाँ, चयन तथा भूमिका : नीलाभ, पृष्ठ 5-6-7
37. वही, पृष्ठ 67
38. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 19-20.
39. मंटो की चर्चित कहानियाँ, संपादक : पनव चौपड़ा, सआदत हसन मंटो : एक परिचय.
40. पाक्षिक 'सरिका' 16 मई, 1979 : अंक 2, मंटो विशेषांक, पृष्ठ 11
41. वही, पृष्ठ 15
42. ('अदबे जदीद', दस्तावेज, पृष्ठ 51), समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 10.
43. ('अदबे जदीद', पृष्ठ 52, 53), समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 11.
44. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 11.
45. वही, पृष्ठ 11.
46. ('इस्मत करोश', वही पृष्ठ 92), समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 13.
47. (तहरीरी बयान संबंद्ध 'धुआँ', वही, पृष्ठ 66), समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 14.
48. वही, पृष्ठ 14.
49. ('अदबे जदीद', पृष्ठ 53), समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 14.
50. समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की द्विमासिक पत्रिका, जनवरी-फरवरी 2005, पृष्ठ 26-27.
51. मंटो की तीस कहानियाँ, चयन तथा भूमिका : नीलाभ, पृष्ठ 14-15.